निर्माण

अंक-17 / वर्ष-2025-26







राष्ट्र की सेवा में परमाणु

नि से सं प्र नि
DCSEM

ATOMS IN THE SERVICE OF THE NATION







निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय

DIRECTORATE OF CONSTRUCTION, SERVICES AND ESTATE MANAGEMENT

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निदेशालय का निरीक्षण (दि. 09.07.2025)











निसेसंप्रनि गृहपत्रिका 'निर्माण'

संरक्षक



श्री कमलेंदु महापात्रा
निदेशक

संपादक



श्री प्रभात कुमार शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल



श्री समीर जाधव
परियोजना निदेशक
(लाइगो-इंडिया परियोजना)



श्री शंकर गोंडाणे
निदेशक (का. एवं प्र.)



श्री अतुल कुमार ठौरा
प्रशासन अधिकारी-III

हिंदी अनुभाग के पदाधिकारी



श्री प्रभात कुमार शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा)



श्रीमती हेमलता कदम
वरिष्ठ लिपिक



श्रीमती अरुणा मोरे
कार्य सहायक/ए

निसेसंप्रनि की राजभाषा कार्यान्वयन समिति



श्री कमलेंदु महापात्रा
निदेशक एवं अध्यक्ष



श्री डी सेनगुप्ता
मुख्य अभियंता (ईएसजी)



श्री समीर जाधव
परियोजना निदेशक
(लाइगो-इंडिया परियोजना)



श्री पी के पांडा
मुख्य परियोजना
अभियंता (पी)



श्री शंकर एस गोंडाणे
निदेशक (का. एवं प्र.)



श्री एस के सैनी
प्रधान (सीक्यूडी)



श्री डी के बाजपेयी
प्रधान (ईएमपीडी)



श्री के आर रेड्डी
प्रधान (ई एवं आईटीएसडी)



श्रीमती सोनाली शुक्ला
वैज्ञानिक अधिकारी/ई



सुश्री नीलम पारकर
भुगतान एवं लेखा अधिकारी



श्रीमती संगीता नाखवा
प्रशासन अधिकारी-III



श्री अतुल कुमार ठौरा
प्रशासन अधिकारी-III



श्रीमती लता के
प्रशासन अधिकारी-III



श्री प्रभात कुमार शर्मा
उप निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
01	अध्यक्ष की कलम से		05
02	संपादकीय		06
03	राष्ट्र निर्माण में हमारा योगदान-निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय 2025-26 (आलेख)	श्री के महापात्रा	07
04	लाइगो-इंडिया परियोजना (आलेख)	श्री समीर जाधव	10
05	मुझे कुछ हो गया तो मेरे परिवार का क्या होगा (आलेख)	श्री शंकर एस. गोंडाणे	12
06	वास्तु कला : एक अनंत यात्रा (कविता)	श्री अंशु गुप्ता	13
07	भारतीय त्रि-चरणीय नाभिकीय कार्यक्रम : थोरियम से आत्मनिर्भरता तक (आलेख)	श्री रोशन मीना	14
08	सपनों की उड़ान (कविता)	श्रीमती मीनाक्षी सिंह	16
09	राष्ट्र प्रथम (निबंध)	श्री ललित मोहन बाजपेयी	17
10	राजभाषा हिंदी : संवैधानिक आधार, प्रशासनिक महत्व और विकास यात्रा (आलेख)	श्री प्रभात कुमार शर्मा	21
11	मन की अभिलाषा (कविता)	श्री संदीप कुमार	23
12	निदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन (रिपोर्ट)		24
13	आप बीती (संस्मरण)	श्री बजरंग लाल प्रजापत	27
14	निसेसंप्रनि दिवस (कविता)	श्री विनोद कुमार मालाकार	28
15	जन्नत-ए-कश्मीर (संस्मरण)	श्रीमती रेश्मा रा. मगरे	29
16	उड़ान से डरती नहीं, सोच से लड़ती औरत (कविता)	श्रीमती संजू कुमारी	31
17	आईना (कविता)	श्रीमती अंजली रविकांत कारडा	32
18	खबर नहीं (कविता)	श्रीमती अंजली रविकांत कारडा	32
19	यादों की अलमारी (कविता)	श्रीमती अंजली रविकांत कारडा	32
20	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दौर (कविता)	श्री संतोष कुमार	33
21	स्वच्छता पखवाड़ा-2026 (रिपोर्ट)		34
22	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (रिपोर्ट)		37
23	मराठी भाषा गौरव दिन समारोह (रिपोर्ट)		38
24	संविधान प्रस्तावना का सामूहिक वाचन (रिपोर्ट)		39

निर्माण

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
25	आउटरीच कार्यक्रम (भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम) (रिपोर्ट)		40
26	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस-2026 (रिपोर्ट)		42
27	सेवानिवृत्त कार्मिकों की सूची (01.04.2025 से 31.03.2026 तक)		43
28	अणुशक्तिनगर में प्रमुख मार्गों के नाम		43
29	परमाणु ऊर्जा विभाग - दृष्टि और लक्ष्य		44



अध्यक्ष की कलम से...

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय की गृह पत्रिका निर्माण के 17वें अंक की प्रति आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

यह निदेशालय परमाणु ऊर्जा विभाग के अधिदेश के अनुरूप अपने दायित्वों के निर्वहन में तत्परता से संलग्न है। पिछले वर्ष के दौरान हमने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित की हैं। इनमें अनेक नए आवासों का निर्माण, मुंबई एवं मुंबई से बाहर परियोजनाओं का कार्यान्वयन, निदेशालय के तहत आने वाले परिसरों का उन्नयन आदि शामिल है। हमारा प्रयास है कि हम अणुशक्तिनगर एवं मुंबई स्थित अन्य कॉलोनियों में रह रहे विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को उच्च गुणवत्तापूर्ण वातावरण प्रदान करें और साथ ही साथ अपने पर्यावरण के संरक्षण को भी प्राथमिकता दें।

हम अपने वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों के साथ-साथ राजभाषा नीति के सम्यक अनुपालन के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। हम संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के तत्वावधान में नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं, हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस, राजभाषा वार्ताओं, हिंदी प्रतियोगिताओं एवं अन्य गतिविधियों का आयोजन करते हैं। साथ ही कार्यालयीन पत्राचार, नोटिंग आदि में भी सभी कार्मिकों के सहयोग एवं सक्रियता से निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति कर रहे हैं।

गृह पत्रिका 'निर्माण' का प्रकाशन भी हमारी राजभाषा नीति के अनुपालन का एक उदाहरण है। 'निर्माण' के 17वें अंक के प्रकाशन हेतु मैं इसके संपादक मंडल, रचनाकारों और इससे जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

अ. महापात्रा

(कमलेंदु महापात्रा)

निदेशक एवं अध्यक्ष, राभाकास, निसेसंप्रनि



संपादकीय

किसी भी संगठन की प्रगति में प्रभावी संप्रेषण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में यह दायित्व और भी बढ़ जाता है, जहाँ विविध भाषायी पृष्ठभूमि से आए कर्मचारी एक साथ कार्य करते हैं। ऐसे में राजभाषा हिंदी न केवल संवाद का माध्यम बनती है, बल्कि प्रशासनिक दक्षता और राष्ट्रीय एकता की सुदृढ़ कड़ी के रूप में भी अपनी पहचान स्थापित करती है।

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय में राजभाषा संबंधी सभी संवैधानिक उपबंधों और अन्य नियमों के अनुपालन हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सक्रिय योगदान उल्लेखनीय है। निदेशालय के कार्मिक अपने वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों के साथ-साथ राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और सभी गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप हम निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो रहे हैं और हमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

हमारा उद्देश्य केवल भाषा का प्रयोग भर नहीं है, सहज, सरल और सुलभ संप्रेषण सुनिश्चित करना है। हमारा प्रयास है कि राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में तकनीक का उचित उपयोग किया जाए।

हमारी गृह पत्रिका ''निर्माण'' इसका उपयुक्त उदाहरण है। इसमें प्रकाशित रचनाएं इस बात का द्योतक हैं कि हमारे साथी अपनी साहित्य सृजन क्षमता में भी तत्पर हैं।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु निदेशक महोदय, संपादक मंडल एवं इसके प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्मिकों का आभार व्यक्त करता हूं।

मुझे पूरा विश्वास है कि गृह पत्रिका 'निर्माण' का यह अंक आपको पसंद आएगा तथा भविष्य के अंकों के लिए आपका सहयोग हमें मिलता रहेगा।

(प्रभात कुमार शर्मा)
उप निदेशक (राजभाषा)



राष्ट्र निर्माण में हमारा योगदान
निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय - 2025-2026

श्री के. महापात्रा, निदेशक

परमाणु ऊर्जा विभाग (पऊवि) ने वर्ष 1965 में ट्रॉम्बे टाउनशिप प्रोजेक्ट (टीटीपी) के रूप में एक संघटक इकाई की स्थापना की थी, मुंबई में स्थित विभिन्न इकाइयों के वैज्ञानिकों, टेक्नोक्रेट और कर्मचारियों के आवास के लिए देवनार (अब अणुशक्तिनगर) में स्वतंत्र आवास परिसर की स्थापना की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। अप्रैल 1982 में इसे निर्माण एवं सेवा समूह (सी एंड एस ग्रुप) के रूप में गठित किया गया था। 1972 से संपदा प्रबंध निदेशालय (डीईएम) आवासन कॉलोनियों के आबंटन और अनुरक्षण का कार्य कर रहा था। इसके बाद, 1 जुलाई 1996 को इस इकाई का वर्तमान निदेशालय के रूप में में विस्तार किया गया।

निसेसंप्रनि का मिशन परमाणु ऊर्जा विभाग के विजन को वास्तविकता में बदलने में सहायता प्रदान करना है। विभिन्न इकाइयों में कार्यरत वैज्ञानिकों, तकनीशियन और पऊवि परिवार के अन्य सहायक कर्मचारी, जो विभाग के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं, अपने संबंधित क्षेत्रों में कार्यात्मक प्रभावशीलता प्राप्त करने के लिए पोषक/अनुकूल वातावरण और उचित आवास सुविधाएं प्रदान करने के पात्र हैं। एक सेवा संगठन के रूप में, निसेसंप्रनि आवश्यक बुनियादी ढाँचों के निर्माण और अनुरक्षण के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग (पऊवि) की विभिन्न इकाइयों को उपरोक्त सेवाएँ प्रदान करता है।

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, परमाणु ऊर्जा विभाग के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों को सहायता प्रदान करने के साथ-साथ इसके सहायता प्राप्त संस्थानों तथा अन्य सरकारी विभागों जैसे विज्ञान/इलेक्ट्रॉनिकी, जैव-प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन विकास आदि के लिए आवासन, छात्रावास, विद्यालय, चिकित्सालय, प्रयोगशाला तथा अन्य सार्वजनिक भवनों के सिविल, जन-स्वास्थ्य, विद्युत, यांत्रिक, वातानुकूलन तथा संवातन आदि कार्यों की योजना, अभिकल्पन, अभियांत्रिकी, निष्पादन, परीक्षण एवं कमिशनन में शामिल है।

वर्ष 2025-2026 के दौरान निसेसंप्रनि की उपलब्धियां

एक सेवा संगठन के रूप में, निसेसंप्रनि विभिन्न इकाइयों में कार्यरत पऊवि परिवार के वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और अन्य सहायक कर्मचारियों को उनके संबंधित क्षेत्रों में कार्यात्मक प्रभावशीलता प्राप्त करने के लिए अनुकूल वातावरण और उचित आवास सुविधाएँ प्रदान करता है। निसेसंप्रनि विभिन्न भू-दृश्यों के विकास, जल पुनर्चक्रण आदि के माध्यम से 'स्वच्छ हरित' अणुशक्तिनगर की दिशा में भी कार्य कर रहा है।

इस अवधि के दौरान निसेसंप्रनि द्वारा निम्नलिखित उपलब्धियाँ अर्जित की गई :

- अणुशक्तिनगर में टाइप-V ई के 312 फ्लैटों का निर्माण पूरा हो गया है और अक्टूबर 2025 में मुंबई स्थित पऊवि की विभिन्न इकाइयों के कर्मचारियों को फ्लैट आबंटित कर दिए गए हैं।
- इंद्रधनुष सांस्कृतिक केंद्र के विस्तार का निर्माण कार्य पूरा हो गया है और इसे विभिन्न संघ कार्यालयों को आबंटित कर दिया गया है।
- अणुशक्तिनगर में बद्रीनाथ बिल्डिंग के पास स्थित नए क्रेच का निर्माण कार्य पूरा हो गया है। अधिभोग हेतु वैधानिक स्वीकृति प्राप्त करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।
- पऊवि उन्नत अध्ययन संस्थान (डीआईएएस) के उन्नयन और विकास कार्य पूरे हो गए हैं।
- नई दिल्ली स्थित ध्रुव गेस्ट हाउस का जीर्णोद्धार कार्य पूरा हो गया है।
- एचबीएनआई के लिए अतिरिक्त दो विंगों का

निर्माण कार्य प्रगति पर है।

- नए टाइप- V के 312 फ्लैटों को मंडाला से जोड़ने वाली सड़क का निर्माण कार्य प्रगति पर है।
- हैदराबाद स्थित टीआईएफआर के लिए 360 करोड़ रुपये की लागत से शैक्षणिक सह आवासीय परिसर और अन्य अवसंरचना सुविधाओं के निर्माण हेतु भूमि पूजन समारोह 23 जून 2025 को संपन्न हुआ और कार्य प्रगति पर है।
- टीएमसी के लिए मुलुंड में आवास पुनर्निर्माण कार्य शुरू किया गया है। सभी मौजूदा इमारतों को ध्वस्त कर दिया गया है। प्रस्तावित इमारतों की वास्तु योजना को अंतिम रूप दे दिया गया है।
- V-ई प्रकार के 52 फ्लैटों का निर्माण कार्य : शेष कार्य 80% पूर्ण हो चुका है।
- भुबनेश्वर स्थित नाइसर के लिए कंप्यूटर विज्ञान विद्यालय भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है और 56% पूर्ण हो चुका है।
- अहमदाबाद स्थित आईटीईआर-इंडिया के लिए कार्यालय भवन के निर्माण हेतु निविदा को अंतिम रूप दे दिया गया है और कार्य आदेश प्रक्रियाधीन है।
- 1600 करोड़ रुपये की लागत से लाइगो-इंडिया के सिविल और निर्वात अवसंरचना के लिए ईपीसी अनुबंध हेतु निविदा आमंत्रित की गई थी और कार्य आदेश 05.03.2026 को जारी किया गया।
- जीसीएनईपी के लिए परिसर और टाउनशिप साइट पर सड़कों, फुटपाथों, जल निकायों, तालाबों, लैंडस्केप प्लाजा, पुनर्भरण गड्ढे, तलछटीकरण टैंक और तूफानी जल निकासी का निर्माण, प्री-स्कूल और गोदाम का निर्माण 100% पूरा हो चुका है।
- वीईसीसी, राजारहाट परिसर, कोलकाता में पीईबी-II के लिए बिटुमिनस रोड, तूफानी जल निकासी, बाहरी सीवर और जल आपूर्ति लाइन, बाहरी विद्युत कार्य आदि का निर्माण 100% पूरा हो चुका है।
- वीईसीसी, राजारहाट परिसर, कोलकाता में पीईबी-II के लिए सिविल कार्य (पाइल फाउंडेशन सहित) और जन स्वास्थ्य इंजीनियरिंग कार्य 68% पूरा हो चुका है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंधन निदेशालय इसे सौंपे गए सभी कार्यों को अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से समय पर पूरा करने के लिए कृत संकल्प है। मैं इस लेख के माध्यम से इस निदेशालय के सभी साथियों को उनके द्वारा निष्ठा एवं अनुशासन से किए जा रहे सभी कार्यों के लिए बधाई देता हूं तथा मुझे पूरा विश्वास है कि हम अपने लक्ष्यों को अवश्य पूरा करेंगे।



अणुशक्तिनगर, मुंबई स्थित पऊवि उन्नत अध्ययन संस्थान के लिए उन्नयन और विकास कार्य



अणुशक्तिनगर, मुंबई में एचबीएनआई के लिए दो अतिरिक्त विंगों का निर्माण

निर्माण



वैश्विक नाभिकीय ऊर्जा भागीदारी केंद्र (जीसीएनईपी) के परिसर में गोदाम और अनुरक्षण कार्यालय भवन का निर्माण



नाइसर परिसर, जटनी, भुबनेश्वर में गणित विद्यालय भवन के विस्तार के रूप में कम्प्यूटर विज्ञान विद्यालय भवन का निर्माण





जीसीएनईपी, बहादुरगढ़, हरियाणा के परिसर और टाउनशिप स्थल पर सड़कों, फुटपाथों, जल निकायों, तालाबों, लैंडस्केप प्लाजा, भूजल पुनर्भरण गड्ढे, तलछटीकरण टैंक, बायोस्वेल और तूफानी जल निकासी का निर्माण





नई दिल्ली में ध्रुव गेस्ट हाउस का उन्नयन







अणुशक्तिनगर में सेंट्रल फाउंटेन से कामेट मार्केट तक ईस्टर्न विस्टा को बेहतर बनाने के साथ-साथ सड़क, फुटपाथ और पार्किंग का विकास



लाइगो-इंडिया (LIGO-India) परियोजना

श्री समीर जाधव, परियोजना निदेशक

लाइगो-इंडिया (LIGO-India) परियोजना का भूमि पूजन एवं परियोजना स्थल कार्यालय का उद्घाटन

लाइगो-इंडिया (LIGO-India) भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के मेगा-साइंस कंसोर्टियम के अंतर्गत वित्तपोषित एक महत्त्वपूर्ण परियोजना है। इसका उद्देश्य अमेरिका स्थित कैलिफोर्निया प्रौद्योगिकी संस्थान (Caltech) तथा मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (MIT) की लाइगो प्रयोगशाला के सहयोग से भारत में लाइगो वेधशाला की स्थापना करना है। यह परियोजना अमेरिका के नेशनल साइंस फाउंडेशन तथा भारत के परमाणु ऊर्जा विभाग एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के मध्य हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अंतर्गत संचालित की जा रही है।

इस परियोजना को साकार करने के लिए चार प्रमुख संस्थान - राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केंद्र (आरआरकैट), इंदौर; प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान (आईपीआर), अहमदाबाद; अंतर-विश्वविद्यालय खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी केंद्र (आईयूसीएए), पुणे; तथा निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, मुंबई - अमेरिका स्थित लाइगो प्रयोगशाला के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं।

लाइगो-इंडिया 4 किलोमीटर लंबा उन्नत अंतरामापी गुरुत्वाकर्षण तरंग डिटेक्टर है, जिसे भारत में स्थापित किया जाएगा। यह गुरुत्वाकर्षण तरंग डिटेक्टरों के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का हिस्सा बनेगा। भारत सरकार ने 6 अप्रैल, 2023 को इस परियोजना को मंजूरी प्रदान की, जिसकी कुल स्वीकृत लागत 2600 करोड़ रुपये है। परियोजना लागत में परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) की समान भागीदारी है। परियोजना की अवधि 7 वर्ष निर्धारित की गई है तथा इसके 30 अप्रैल, 2030 तक पूर्ण होने की अपेक्षा है।

परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रौद्योगिकी दिवस समारोह के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री जी ने 11 मई, 2023 को दूरस्थ माध्यम से परियोजना स्थल का उद्घाटन एवं आधारशिला रखी थी।

आवश्यक सिविल अवसंरचना तथा वैक्यूम प्रणाली की जटिल एवं चुनौतीपूर्ण प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, लाइगो-इंडिया वेधशाला के लिए सिविल अवसंरचना निर्माण तथा वैक्यूम प्रणाली निर्माण हेतु निविदा एकीकृत ईपीसी (EPC) निविदा के रूप में जारी की गई। मेसर्स लार्सन एंड टुब्रो (एल एण्ड टी) ने सफलतापूर्वक बोली प्राप्त कर अनुबंध हासिल किया। ईपीसी अनुबंध दिनांक 05 मार्च, 2026 को प्रदान किया गया।

परियोजना का भूमि पूजन समारोह दिनांक 23 अप्रैल, 2026 को महाराष्ट्र के हिंगोली जिले के औंढा स्थित परियोजना स्थल पर मेसर्स एल एण्ड टी द्वारा आयोजित किया गया। यह समारोह प्रातः 10:30 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव एवं परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अजीत कुमार मोहंती थे।

कार्यक्रम में लाइगो-इंडिया परियोजना से जुड़े प्रमुख संस्थानों के प्रतिनिधियों के रूप में श्री के. महापात्रा, निदेशक, निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंधन निदेशालय; श्री वी. पी. भानगे, निदेशक, राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केंद्र; डॉ. तापस गांगुली, निदेशक, प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान; तथा प्रोफेसर श्रीआनंद, निदेशक, अंतर-विश्वविद्यालय खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी केंद्र उपस्थित थे।

इसके अतिरिक्त, हिंगोली के जिला कलेक्टर श्री राहुल गुप्ता (आईएएस) तथा पुलिस अधीक्षक डॉ. नीलाभ

रोहन भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। मेसर्स एल एंड टी की ओर से श्री अनिल वी. परब, वरिष्ठ कार्यकारी उपाध्यक्ष (भारी इंजीनियरिंग एवं विनिर्माण), श्री एम. वी. रामकृष्ण राजू, उपाध्यक्ष, तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

अपने संबोधन में परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव डॉ. अजीत कुमार मोहंती ने कहा कि यह परियोजना निर्माण मानकों तथा अपेक्षित निर्वात स्तर की दृष्टि से अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मेसर्स लार्सन एंड टुब्रो के पास इस चुनौतीपूर्ण कार्य को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूर्ण करने की विशेषज्ञता एवं क्षमता उपलब्ध है।

उन्होंने कहा कि लाइगो-इंडिया भारतीय धरती पर स्थापित होने वाली एक विशाल वैज्ञानिक परियोजना होगी, जो आने वाली पीढ़ियों को विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि लाइगो-इंडिया वेधशाला के माध्यम से हिंगोली राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक केंद्र के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेगा।

उन्होंने आगे कहा कि लाइगो-इंडिया जैसी मूलभूत विज्ञान परियोजनाओं के लिए प्रौद्योगिकी को नई सीमाओं तक ले जाना आवश्यक है, जिससे अन्य अनुप्रयोगों एवं क्षेत्रों को भी लाभ प्राप्त होता है। उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए परियोजना टीम को बधाई देते हुए परियोजना की सफल पूर्णता हेतु शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

भूमि पूजन समारोह के उपरांत, परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव एवं परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अजीत कुमार मोहंती ने परियोजना से जुड़े प्रमुख संस्थानों के निदेशकों की उपस्थिति में लाइगो-इंडिया परियोजना स्थल कार्यालय का औपचारिक उद्घाटन किया।

कार्यक्रम का समापन परियोजना स्थल कार्यालय के खुले प्रांगण में गणमान्य अतिथियों द्वारा पौधारोपण के साथ हुआ।









''मुझे कुछ हो गया तो मेरे परिवार का क्या होगा''

श्री शंकर एस. गोंडाणे
निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)

मुझे कुछ हो गया तो मेरे परिवार का क्या होगा? ये सोच मुझे कभी-कभी कायर भी बना देती है। अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने से मुझे कभी- कभी या अक्सर डर लगता है। बहुत बार मैं देखता हूँ, जानता हूँ कि कुछ गलत हो रहा है। आवाज उठाना चाहकर भी, अपने आप को रोक लेता हूँ।

लेकिन ये सोच मुझे कई बार गलत कामों को करने से रोकती भी है। जैसे लापरवाही से गाड़ी चलाना या तेज गति से गाड़ी चलाना या मैं जब कोई सिग्नल तोड़ता हूँ और अगर मैं यह सोचता हूँ कि सामने पुलिस वाला होगा तो मुझे मोटर वाहन अधिनियम के तहत दंड लगाया जायेगा और वो दंड पंद्रह सौ रुपये से कम का ना होगा, जो एक साधारण व्यक्ति के लिये बडा दंड होता है, मुझे अन्य खर्चो मे कमी करनी होगी, ये सोच तो मुझे नियमो को पालन करने की सीख देती है। यहाँ डर तो अच्छा है, बचत के काम आया। चलिए आगे बढ़ते है। अगर मैं तंबाकू का सेवन करता हूँ और जब मुझे मालूम है कि तंबाकू खाने से कैंसर होने का खतरा है, या मैं सिगरेट पीता हूँ और मुझे पता है कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, तो मेरी ये सोच कि मेरे बाद मेरे परिवार का क्या होगा, मुझे रोकती है कि मुझे सिगरेट नहीं पीनी चाहिये, तंबाकू नहीं खाना चाहिये, अगर मैं कैंसर से मर जाऊँ तो मेरे परिवार का क्या होगा? सिगरेट पीने की खुशी और मरने का डर, यहाँ मरने के डर की जीत हो जाती है, यह एक सोच मुझे गलत काम करने से रोक लेती है। चलिए आगे चलते हैं। अब गुस्से पर काबू पाने की बात। मन के विपरीत घटना घटी और गुस्सा आया। लेकिन एक सोच फिर मुझे रोक देती है कि रुको, गुस्से को काबू में रखो। आपको गुस्सा आ रहा है, और आप कुछ कहोगे और अगर सामने वाले का मूड खराब है, वह अपनी बीवी से झगड़ा करके आया हैं तो उस बात को वो किसी और तरीके से लेगा और गुस्से में न जाने वो क्या कर बैठे, कोई हथियार ही उठा ले और मेरी जान ही ले ले। अगर ऐसा हुआ तो मेरे परिवार का क्या होगा, यह सोच मेरे गुस्से को काबू में रखने में मददगार साबित होती है।

चलिए अब उपरोक्त सोच का विश्लेषण करते है ।

यह ''कायरता'' नहीं है कि आप अपने परिवार के बारे में सोचते हैं। यह एक जिम्मेदार इंसान की सोच है। परिवार, बच्चे, उनकी पढ़ाई, उनका भविष्य - इनकी चिंता करना स्वाभाविक है।

लेकिन एक दूसरी सच्चाई भी है : अगर समाज में हर व्यक्ति केवल डरकर चुप हो जाए, तो गलत लोगों का मनोबल बढ़ता है और समाज में, देश में अराजकता फैलने का डर बना रहता है। ऐसे में नागरिक असहाय हो जाएंगे, उनके मौलिक और लोकतांत्रिक अधिकारो का सरेआम हनन होता जायेगा ।

इसलिए संतुलन बहुत जरूरी है - न अंधी बहादुरी, न पूरी चुप्पी।

- हर अन्याय के सामने सीधे भिड़ना जरूरी नहीं।
- हर लड़ाई सड़क पर खड़े होकर नहीं लड़ी जाती।
- समझदारी से, सुरक्षित तरीके से भी सच्चाई सामने लाई जा सकती है।

आज के समय में कई रास्ते हैं :

- लिखित शिकायत,
- ऑनलाइन शिकायत,
- सबूत इकट्ठा करना,
- गुमनाम सूचना देना,
- कानूनी प्रक्रिया अपनाना,
- सही लोगों और संस्थाओं तक बात पहुँचाना।

यह भी साहस ही है। साहस का मतलब केवल जान जोखिम में डालना नहीं होता। कई बार सबसे बड़ा साहस होता है - गुस्से को नियंत्रित करना, जल्दबाजी से बचना, और सही समय पर सही कदम उठाना।

''मेरे बाद मेरे परिवार का क्या होगा?''

यह सोच आपको कई गलत कामों से भी रोकती है - जैसे गुस्से में प्रतिक्रिया देना, स्वास्थ्य खराब करने वाली चीजें, या अनावश्यक जोखिम लेना। यह डर नहीं, बल्कि जिम्मेदारी की चेतना भी है।

लेकिन एक बात का ध्यान रखिए :

डर इतना भी न बढ़े कि आप भीतर से टूटने लगें या हर समय खतरा महसूस करें। क्योंकि लगातार भय में जीना इंसान को निराश बना देता है, थका देता है और निराशा को जन्म देता है ।

इसलिए शायद सबसे संतुलित रास्ता यही है :

- सच का साथ दीजिए,
- लेकिन सोच-समझकर,
- कानून के दायरे में,
- बिना अनावश्यक जोखिम लिए,
- और जहाँ तक संभव हो, सामूहिक तरीके से।

अकेले लड़ने की जगह कई बार मिलकर, व्यवस्था के माध्यम से, शांत तरीके से बदलाव ज्यादा प्रभावी होता है। यह सोचिए कि जो गलत काम हो रहे हैं, उनसे लोगों को किस प्रकार जागरूक किया जाए। देश के बारे में सोचना बहुत जरूरी है, लेकिन उसके लिए जो व्यवस्था और मशीनरी बनी हुई है, उसका सही उपयोग करना आना चाहिए। अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाइए, लेकिन आवाज़ वैसी होनी चाहिए जैसी महात्मा गांधी ने उठाई थी, जैसी डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर ने उठाई थी।

लोग जानते हैं कि एक समय ऐसा था जब बाबा साहेब आंबेडकर को सार्वजनिक जल निकायों से पानी पीने तक की अनुमति नहीं थी। मंदिरों में प्रवेश पर प्रतिबंध था। समाज में भेदभाव था। लेकिन उन्होंने जिस प्रकार से आवाज़ उठाई, वह अहिंसा का मार्ग था। उन्होंने शांति और कानूनी तरीके से लोगों को जागृत किया, संघर्ष किया और अधिकार प्राप्त किये ।

ऐसे बहुत से लोग हुए हैं जिन्होंने अहिंसा के मार्ग से अपने अधिकार प्राप्त किए। आज भी उन्हें सम्मान से याद किया जाता है।

इसलिए मैं यही कहता हूँ कि जल्दबाजी में कोई कदम मत उठाइए। जो भी करें, सोच-समझकर करें।

वास्तुकला : एक अनंत यात्रा



श्री अंशु गुप्ता
वैज्ञानिक अधिकारी/एच
प्रधान वास्तुकार (अ) एवम् प्रधान
(योजना, समन्वयन एवं अभिकल्पन)

मेरे पत्थर के सीने में धड़कता, वास्तुकार का ख़्वाब है,
मैं 'वास्तुकला', मुझमें समाहित, हर युग का हिसाब है।
जब मनुष्य गुफाओं से निकलकर बाहर आया था,
तब मैंने ही मिट्टी और घास से उसका घर बनाया था।।

मैं केवल पत्थर, ईंट और गारे का ढेर नहीं हूँ,
मैं इंसानी सपनों की एक मूक और जीवंत लहर हूँ।
मैंने मोहनजोदड़ो की गलियों में अनुशासन देखा है,
पिरामिडों के रूप में मैंने सदियों का शासन देखा है।।

मैं अजंता की गुफाओं में मौन साधना की मूरत हूँ,
मैं घाटों की आरती और बनारस की अनुपम सूरत हूँ।
मुझमें मुगलों की नक्काशी और राजपूती शौर्य है,
मैं सांची का शांत स्तूप और मुझमें बुद्ध का धैर्य है।।

पुरानी गलियों की महक और नए पुलों का विस्तार हूँ मैं,
जो कभी खत्म न हो, उस निरंतर सफर का सार हूँ मैं।
मैं महल की शान भी हूँ और फुटपाथ का बसेरा भी,
मैं ढलती हुई शाम भी हूँ और उम्मीद का सवेरा भी।।

मेरी हर नक्काशी में शतकों का इतिहास निरूपित है,
मैं वो भव्य सत्य हूँ, जो हर दौर में प्रतिबिंबित है।
आज मैं कंक्रीट के जंगल में कांच का लिबास पहनती हूँ,
गगनचुंबी इमारतों के रूप में आधुनिकता बखानती हूँ।।

मैं पत्थरों में कैद नहीं, सांसों का विस्तार हूँ मैं,
बीता हुआ कल नहीं, आने वाला संसार हूँ मैं।
मैं कल भी थी, मैं आज भी हूँ, और कल भी रहूँगी,
मैं 'वास्तुकला' हूँ,
मैं खामोश रहकर भी सबकुछ कहूँगी।।



भारतीय त्रि-चरणीय नाभिकीय कार्यक्रम : थोरियम से आत्मनिर्भरता तक

श्री रोशन मीना, वैज्ञानिक सहायक-डी-1

''समुद्र तटों की शांत रेत में वह शक्ति सो रही थी, जो आने वाली सदियों तक भारत को रोशन करने वाली थी''

आज आधुनिक भारत की सबसे महान यात्राओं में से एक - भारतीय नाभिकीय कार्यक्रम - पर चर्चा की जा रही है। यह केवल एक वैज्ञानिक परियोजना नहीं, बल्कि दूरदृष्टि, साहस, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय गौरव की अद्भुत गाथा है।

जब भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ, तब देश के अनेक गाँव अंधकार में डूबे हुए थे। उद्योगों की कमी थी, ऊर्जा संसाधन सीमित थे और बड़ी आबादी को बिजली तक उपलब्ध नहीं थी। आज भी देश के कई हिस्सों में बिजली की कमी महसूस की जाती है। जैसे-जैसे हमारी अर्थव्यवस्था और जनसंख्या बढ़ रही है, ऊर्जा की मांग भी तेजी से बढ़ती जा रही है। पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों पर भारी दबाव है और अध्ययनों से संकेत मिलता है कि इस शताब्दी के मध्य तक जीवाश्म ईंधन के भंडार कम होने लगेंगे। इन परिस्थितियों ने स्पष्ट कर दिया कि भारत को दीर्घकालिक और स्थायी ऊर्जा समाधान की आवश्यकता है।

ऐसे कठिन समय में एक महान वैज्ञानिक, डॉ. होमी जहांगीर भाभा ने एक बड़ा सपना देखने का साहस किया। उनका विश्वास था कि विज्ञान और परमाणु ऊर्जा भारत को एक शक्तिशाली और आत्मनिर्भर राष्ट्र बना सकती है। उन्होंने समझ लिया था कि भारत के समुद्री तटों की मोनाज़ाइट रेत में छिपा थोरियम भविष्य का ''ऊर्जा सोना'' बन सकता है। उस समय दुनिया का अधिकांश ध्यान यूरेनियम पर था, लेकिन भारत चुपचाप थोरियम पर शोध कर रहा था। इसी सोच के साथ भारत ने अपने परमाणु कार्यक्रम की शुरुआत की - विनाश के लिए नहीं, बल्कि विकास, शांति, प्रगति और ऊर्जा सुरक्षा के लिए।

भारत की परमाणु नीति दुनिया से अलग और अनोखी थी, क्योंकि यह भारत के अपने प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित थी। भारत के पास विश्व के केवल लगभग 1–2% यूरेनियम भंडार हैं, लेकिन दुनिया के सबसे बड़े थोरियम भंडारों में से एक - लगभग 25% - भारत में मौजूद है। ये विशाल थोरियम भंडार मुख्य रूप से केरल, तमिलनाडु, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के समुद्री तटों की मोनाज़ाइट युक्त रेत में पाए जाते हैं।

भारत के समुद्र तटों की साधारण दिखने वाली काली रेत वास्तव में दुनिया की सबसे बड़ी ऊर्जा संपदाओं में से एक को अपने भीतर छिपाए हुए है।

सबसे रोचक तथ्य यह है कि केरल के चावरा क्षेत्र जैसे कुछ समुद्री तटीय इलाकों में थोरियम युक्त खनिजों के कारण प्राकृतिक रेडियोधर्मिता सामान्य से अधिक पाई जाती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ये भंडार भारत को आने वाली कई सदियों तक स्वच्छ परमाणु ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं।

इसी असाधारण संसाधन ने डॉ. भाभा के दूरदर्शी ''त्रि-चरणीय नाभिकीय कार्यक्रम'' की नींव रखी, जिसे 1950 के दशक में भारत की दीर्घकालिक ऊर्जा आत्मनिर्भरता और सतत विकास को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। सबसे दिलचस्प बात यह है कि तीन-चरणीय कार्यक्रम का वास्तविक लक्ष्य शुरुआत से ही थोरियम था। पहला और दूसरा चरण केवल ''सीढ़ियाँ'' थे - अंतिम मंजिल नहीं। दूसरा चरण फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों के माध्यम से अधिक विखंडनीय ईंधन उत्पन्न करने के लिए बनाया गया।

और तीसरा चरण - असली सपना - भारत को थोरियम आधारित आत्मनिर्भर ऊर्जा राष्ट्र बनाना था।

पहला चरण : इसमें प्राकृतिक यूरेनियम आधारित प्रेशराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर (PHWR) का उपयोग

किया जाता है। ये रिएक्टर बिजली उत्पादन के साथ-साथ प्लूटोनियम-239 भी उत्पन्न करते हैं।

दूसरा चरण : इसमें फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (FBR) आते हैं, जो प्लूटोनियम आधारित मिश्रित ईंधन का उपयोग करते हैं। ये अत्याधुनिक रिएक्टर जितना ईंधन उपयोग करते हैं, उससे अधिक ईंधन उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं। इसमें यूरेनियम-238 अतिरिक्त प्लूटोनियम-239 में परिवर्तित होता है। पर्याप्त प्लूटोनियम बनने के बाद थोरियम को रिएक्टर में उपयोग कर यूरेनियम-233 में बदला जाता है, जो तीसरे चरण का मुख्य ईंधन बनता है।

तीसरा चरण : इसमें एडवांस्ड हेवी वाटर रिएक्टर (AHWR) शामिल हैं, जो थोरियम-232 और यूरेनियम-233 पर आधारित होंगे और भारत को सदियों तक आत्मनिर्भर परमाणु ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं।

थोरियम स्वयं सीधे विखंडनीय ईंधन नहीं है, लेकिन रिएक्टर के अंदर यह यूरेनियम-233 में परिवर्तित हो सकता है। यही कारण है कि थोरियम को भारत के परमाणु भविष्य की कुंजी माना जाता है।

''शायद इतिहास का सबसे अद्भुत और रहस्यमयी संयोग यही है कि जिस तत्व का नाम शक्ति, बिजली और गर्जना के देवता 'थॉर' पर रखा गया, वही भविष्य की असीम ऊर्जा का प्रतीक बनकर सदियों से भारत के शांत समुद्री तटों की काली रेत में मौन पड़ा रहा - मानो प्रकृति ने स्वयं भारत को आने वाले युगों की ऊर्जा महाशक्ति बनने का वरदान दिया हो।''

भारत के परमाणु कार्यक्रम ने देश की वैज्ञानिक क्षमता और दृढ़ संकल्प को भी दुनिया के सामने साबित किया है। वर्षों तक तकनीकी प्रतिबंधों और अंतरराष्ट्रीय अलगाव का सामना करने के बावजूद, भारत ने अपने वैज्ञानिक अनुसंधान और स्वदेशी तकनीक के बल पर परमाणु तकनीक विकसित की। इसमें भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) और परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE) जैसी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

हाल ही में भारत ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की, जब प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु के कल्पाक्कम स्थित स्वदेशी प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR) में कोर-लोडिंग प्रक्रिया की शुरुआत की। यह भारत के त्रि-चरणीय नाभिकीय कार्यक्रम के दूसरे चरण में प्रवेश का ऐतिहासिक क्षण था। कल्पाक्कम का प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर केवल एक बिजली संयंत्र नहीं माना जाता - वैज्ञानिक समुदाय में इसे ''डॉ. भाभा के अधूरे सपने का पुनर्जागरण'' भी कहा जाता है।

यह केवल एक रिएक्टर की शुरुआत नहीं थी। यह उस सपने की निरंतरता थी, जिसे डॉ. होमी भाभा ने लगभग सत्तर वर्ष पहले देखा था।

फास्ट ब्रीडर रिएक्टर दुनिया की सबसे उन्नत परमाणु तकनीकों में से एक हैं। ये रिएक्टर जितना ईंधन उपयोग करते हैं, उससे अधिक ईंधन उत्पन्न करते हैं और भविष्य में थोरियम आधारित तीसरे चरण को सफल बनाने की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में अधिक फास्ट ब्रीडर रिएक्टर भारत के लिए आवश्यक परमाणु ईंधन भंडार तैयार करेंगे, जिससे देश का थोरियम आधारित ऊर्जा भविष्य मजबूत होगा।

परमाणु ऊर्जा के लाभ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह अत्यधिक सघन ऊर्जा स्रोत है। 10,000 मेगावाट परमाणु क्षमता के लिए केवल लगभग 300–350 टन समृद्ध ईंधन की आवश्यकता होती है, जबकि समान क्षमता के कोयला आधारित संयंत्र के लिए हर वर्ष 35–50 मिलियन टन कोयले की आवश्यकता पड़ती है। इससे परिवहन व्यवस्था पर भारी दबाव पड़ता है और प्रदूषण भी बढ़ता है।

दुनिया के अनेक देशों ने फास्ट ब्रीडर तकनीक को अत्यधिक कठिन, महंगी और जोखिमपूर्ण मानकर पीछे हटना शुरू कर दिया, लेकिन भारत ने इसे छोड़ा नहीं। कारण स्पष्ट था - भारत जानता था कि फास्ट ब्रीडर रिएक्टर ही थोरियम युग का द्वार खोलेंगे।

थोरियम युक्त समुद्री रेत से लेकर फास्ट ब्रीडर रिएक्टर तक की यह ऐतिहासिक यात्रा भारत की दूरदृष्टि, वैज्ञानिक साहस और आत्मनिर्भरता की अमर

गाथा है। यह यात्रा एक ऐसा संदेश देती है, जो आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करता रहेगा-

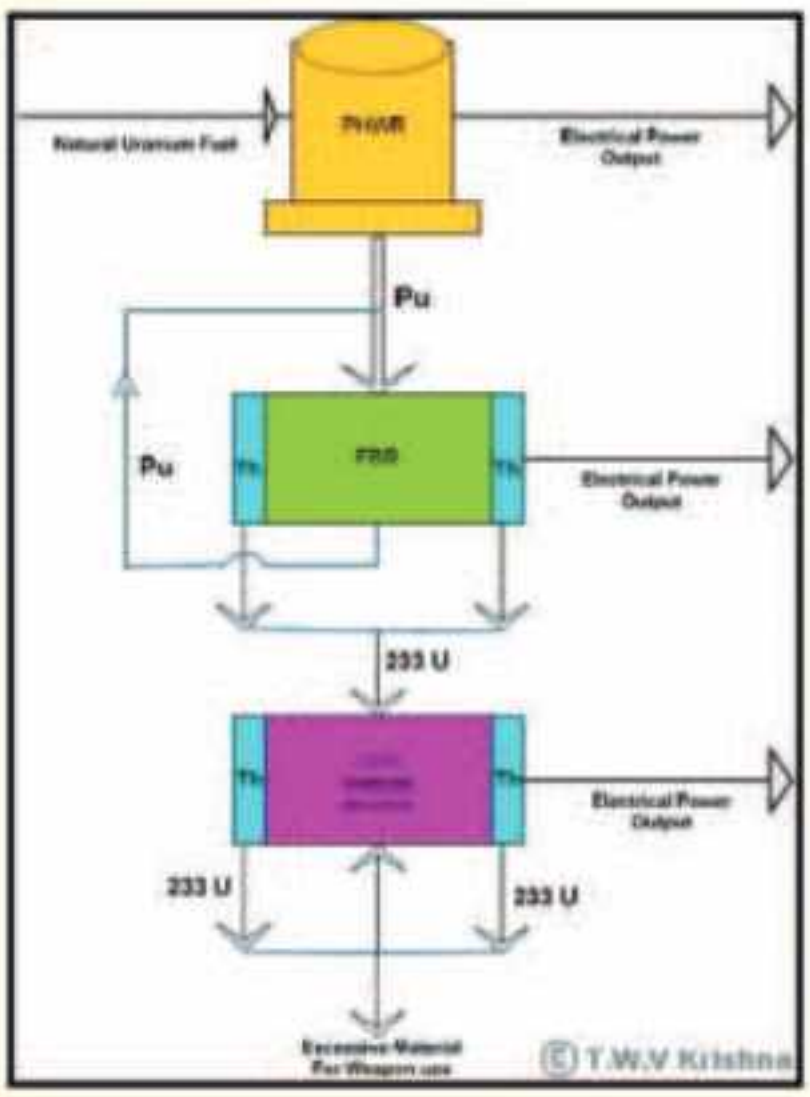
''जब दुनिया तेल के कुओं में भविष्य खोज रही थी,

तब भारत अपने समुद्र तटों की काली रेत में आने वाली सदियों की ऊर्जा, शक्ति और सभ्यता का भविष्य तलाश रहा था।''

भारत का नाभिकीय कार्यक्रम केवल वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह भारत के साहस, धैर्य, नवाचार और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है।

और शायद इस पूरी कहानी की सबसे सुंदर बात यह है कि भारत का सबसे बड़ा परमाणु खजाना धरती की गहराइयों में नहीं, बल्कि सदियों से हमारी मातृभूमि के समुद्री तटों पर शांतिपूर्वक हमारा इंतजार कर रहा था।

जय हिन्द।



सपनों की उड़ान



श्रीमती मीनाक्षी सिंह
वैज्ञानिक सहायक / ई

कितने ही सपनों को हकीकत बनाया है मैंने,
और कितने के लिए अपने दिल को समझाया है मैंने।
मुश्किलें बहुत सी आई जिंदगी के सफर में,
कई अपने बिछड़ गए इस डगर मे।
बस भरनी थी हमें अपने सपनों की उड़ान,
और चाहा कि खुदा भी हो हम पर मेहरबान ।
जब छोटी थी, तो सपने भी तो छोटे-छोटे
ना पूरे होने पर, आंसू बहते थे मोटे मोटे ।
जब भी कोई सपना टूटे तो आंखें हो जाती थी नम,
क्योंकि सपना टूटने पर होता है बहुत ग़म।
अब तो मैं भी बड़ी हो गई,
सपनों की उड़ान के लिए खड़ी हो गई।
भरूंगी ऐसे अपने सपनों की उड़ान,
कि सभी लोग करेंगे मेरा सम्मान।
अपने सपनों की उड़ान भरने के लिए
मैंने बहुत कुछ खोया है,
अपनों से बिछड़ कर यह दिल
ना जाने कितनी बार रोया है।
जिंदगी तो यूं ही चलती जाती है,
सपनों की दुनिया भी बसती जाती है ।
अपने सपनों को पूरा करने का हमेशा,
मुझ में रहता है जुनून,
जब पूरी होती है कोई उड़ान तो
दिल को मिलता है सुकून ।
बहुत सपने अधूरे भी रह जाते हैं,
पर यह भी जिंदगी को एक नया सबक सिखलाते हैं ।
सपनों की दुनिया तो बहुत अच्छी है,
पर जिंदगी की वास्तविकता ही सच्ची है ।
सपने देखो और उन्हें पूरा करने के लिए
हमेशा भरो उड़ान,
पर अगर सपने पूरे ना हो तो भी
तुम बने रहो खुश दिल इंसान।



राष्ट्र प्रथम

श्री ललित मोहन बाजपेयी, वैज्ञानिक सहायक/सी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ठाणे द्वारा आयोजित
अखिल भारतीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त निबंध

प्रस्तावना

''राष्ट्र प्रथम'' का सिद्धांत केवल एक नारा नहीं, बल्कि वह मार्गदर्शक है जिसके माध्यम से किसी भी राष्ट्र की नीतियाँ और निर्णय गढ़े जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि व्यक्तिगत, क्षेत्रीय या किसी विशेष समूह के हितों से ऊपर राष्ट्र का हित सर्वोपरि होना चाहिए। राष्ट्र की सुरक्षा, आर्थिक प्रगति, सामाजिक न्याय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को हर परिस्थिति में सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने पहले पॉडकास्ट में स्पष्ट रूप से कहा था कि उनका जीवन मंत्र सदैव यही रहा है - ''राष्ट्र प्रथम''। यह केवल व्यक्तिगत अनुभव नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की गहराई से जुड़ा हुआ मूल्य है। प्रधानमंत्री ने युवाओं को यह संदेश दिया कि राजनीति हो या सामाजिक जीवन, लक्ष्य राष्ट्र के उत्थान का होना चाहिए, न कि केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि महात्मा गांधी, नेहरू, पटेल, बोस और अनगिनत अन्य क्रांतिकारियों ने व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं का त्याग कर राष्ट्र को सर्वोपरि रखा। यही भाव आज की पीढ़ी को अपनाना चाहिए क्योंकि मिशन सदैव राष्ट्र का होता है, जबकि महत्वाकांक्षा प्रायः व्यक्तिगत होती है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण

भारत का इतिहास गवाह है कि जब-जब राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना गया, तब-तब भारत ने नई ऊँचाइयों को छुआ। प्राचीन काल में चाणक्य ने स्पष्ट कहा था - ''सुखं हि राष्ट्रस्य सुखं नृपस्य, दुःखं तु राष्ट्रस्य दुःखं नृपस्य।'' इसका अर्थ यह है कि शासक का सुख-दुःख राष्ट्र के सुख-दुःख से जुड़ा होना चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी ने वकालत का चमकदार करियर छोड़ दिया और सादगी भरा जीवन अपनाकर सत्य और अहिंसा के माध्यम से आंदोलन का नेतृत्व किया। जवाहरलाल नेहरू ने धन-संपन्न जीवन और करियर को त्यागकर जेल में नौ साल से अधिक समय बिताया। सरदार पटेल, जो एक सफल बैरिस्टर थे, उन्होंने किसानों और आम जनता को संगठित कर राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त किया। सुभाष चंद्र बोस ने प्रतिष्ठित सरकारी नौकरी को त्यागकर आज़ाद हिंद फ़ौज का गठन किया और ब्रिटिश साम्राज्य को सीधी चुनौती दी। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जैसे युवाओं ने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों से लड़ते हुए ''मैं अपनी झांसी नहीं दूँगी'' का उद्घोष किया और देश की अस्मिता की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। भिकाजी कामा ने यूरोप में आरामदायक जीवन त्यागकर विदेशों से क्रांतिकारियों का समर्थन किया और भारत का ध्वज पहली बार विदेश में फहराया। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि भारत के इतिहास में ''राष्ट्र प्रथम'' केवल एक आदर्श नहीं बल्कि जीवन का व्यवहारिक दर्शन रहा है।

दार्शनिक दृष्टिकोण

भारत का इतिहास गवाह है कि भारतीय संस्कृति में राष्ट्र को सर्वोपरि मानने की परंपरा गहरी रही है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का आदर्श विश्व को एक परिवार मानता है, किंतु यह तभी संभव है जब अपनी राष्ट्र-नींव मज़बूत हो। स्वामी विवेकानंद ने कहा था - ''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।'' उनका लक्ष्य केवल व्यक्तिगत उत्थान नहीं, बल्कि राष्ट्र की शक्ति और आत्मनिर्भरता था। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को राष्ट्रहित का साधन

बनाया। अरस्तू ने मनुष्य को ''राजनीतिक प्राणी'' बताया और कहा कि उसका सर्वोच्च कर्तव्य राष्ट्र के हित में योगदान करना है। प्लेटो ने अपनी पुस्तक 'रिपब्लिक' में न्यायपूर्ण राज्य की कल्पना की और राष्ट्र को सर्वोपरि माना। आधुनिक समय में दार्शनिक जॉन लॉक और रूसो ने भी सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत के माध्यम से यह बताया कि व्यक्ति और राज्य का संबंध तभी टिकाऊ है जब व्यक्ति अपने कुछ अधिकार राष्ट्रहित में त्याग करे। इन विचारों से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि रखना केवल भारतीय ही नहीं बल्कि वैश्विक परंपरा है।

विभिन्न देशों से सीख

दुनिया के कई देश ''राष्ट्र प्रथम'' की नीति को अपनाकर प्रगति की ऊँचाइयों पर पहुँचे हैं। इज़रायल ने अपनी सुरक्षा को सर्वोपरि मानते हुए रक्षा तकनीक में आत्मनिर्भरता हासिल की। छोटा देश होने के बावजूद उसने दुनिया के सबसे उन्नत रक्षा तंत्र बनाए और अपने अस्तित्व की रक्षा की। जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अनुशासन, आत्मनिर्भरता और शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया। उसने तकनीक और कड़ी मेहनत को राष्ट्र निर्माण का आधार बनाया और कुछ दशकों में विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में स्थान पाया। अमेरिका में राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट ने ग्रेट डिप्रेशन जैसी भयंकर आर्थिक परिस्थिति के दौरान ''न्यू डील'' लागू की, जिससे जनता और उद्योगों को राहत मिली और राष्ट्र नई शक्ति के साथ उभरा। जर्मनी ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अपनी नष्ट अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढाँचे को पुनर्निर्माण की शक्ति से खड़ा किया और आज यूरोप का सबसे मज़बूत राष्ट्र है। चीन ने 1978 के बाद आर्थिक सुधारों को अपनाकर ''राष्ट्र प्रथम'' की नीति को आर्थिक प्रगति के साथ जोड़ा और आज विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। दक्षिण कोरिया ने तकनीक और शिक्षा पर निवेश करके अपने छोटे से भूभाग को वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबाइल हब में बदल दिया। इन देशों से हमें यही सीख मिलती है कि जब राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना जाए तो सीमित संसाधनों में भी महान उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं।

भारत में राष्ट्र प्रथम की झलक

भारत ने भी अनेक अवसरों पर ''राष्ट्र प्रथम'' की भावना को सिद्ध किया है। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाना राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में ऐतिहासिक निर्णय था। आतंकवाद के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक जैसी कार्रवाइयों ने यह संदेश दिया कि भारत अपनी संप्रभुता और सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं करेगा। विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान की पाकिस्तान से सुरक्षित वापसी ने सैनिक सम्मान और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की रक्षा का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। इसी प्रकार, भारत ने 2023 में जी-20 शिखर सम्मेलन की मेज़बानी कर यह साबित किया कि उसकी विदेश नीति और वैश्विक नेतृत्व ''राष्ट्र प्रथम'' की भावना से प्रेरित है। चंद्रयान-3 की सफलता और आदित्य-एल1 मिशन ने यह दिखाया कि वैज्ञानिक प्रगति भी राष्ट्र की प्रतिष्ठा और आत्मनिर्भरता को नई ऊँचाई देती है।

आर्थिक और सामाजिक सुधार

भारत ने समय-समय पर अनेक सुधार किए जिनका मूल उद्देश्य राष्ट्र को मज़बूत बनाना था। 1970 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण ग्रामीण और पिछड़े वर्गों तक वित्तीय पहुँच सुनिश्चित करने के लिए हुआ। 1991 में डॉ. मनमोहन सिंह ने उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीति लागू की, जिसने आर्थिक संकट से भारत को उबारा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में शामिल किया। 2014 के बाद डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं ने विकास को नई दिशा दी। जन धन योजना ने करोड़ों लोगों को बैंकिंग से जोड़ा, जबकि स्टार्टअप इंडिया ने युवाओं को नवाचार और उद्यमिता के लिए प्रेरित किया। UPI भारत की 'राष्ट्र प्रथम' नीति का एक आधुनिक आर्थिक उपकरण है। जब डिजिटल भुगतान प्रणाली तेज़, सुरक्षित और सभी नागरिकों के लिए सुलभ होती है, तो यह देश की

आर्थिक सुरक्षा, पारदर्शिता और विकास को सुनिश्चित करती है। UPI के माध्यम से कैशलेस लेन-देन बढ़ते हैं, कर चोरी कम होती है और छोटे व्यापारियों तक बैंकिंग पहुँचती है। इससे देश की वित्तीय समृद्धि और आर्थिक संप्रभुता मजबूत होती है। 2017 में जीएसटी लागू कर, कर प्रणाली को सरल और पारदर्शी बनाया गया। कोविड-19 महामारी के समय भारत ने 2.2 अरब से अधिक वैक्सीन खुराक लगाकर आत्मनिर्भरता और जनता की सुरक्षा दोनों का उदाहरण प्रस्तुत किया। रक्षा उत्पादन और निर्यात में भी भारत ने नई ऊँचाइयाँ छुईं। 2024–25 में रक्षा निर्यात रिकॉर्ड स्तर पर पहुँचे, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि आत्मनिर्भर भारत केवल आर्थिक नारा नहीं बल्कि सुरक्षा और सामरिक क्षमता का प्रतीक है। भारत में सामाजिक सुधार के तहत केंद्र सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जिनका उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण, समानता और अधिकारों को सुनिश्चित करना है। इन सुधारों में तीन तलाक बिल 2019 एक अहम उदाहरण है, जिसने मुस्लिम महिलाओं को तत्काल तलाक से सुरक्षा और कानूनी अधिकार सुनिश्चित किए। इसके अलावा, स्वच्छ भारत मिशन, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और कौशल विकास मिशन जैसी पहलें समाज के सभी वर्गों के सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा पर केंद्रित हैं। स्वच्छ भारत मिशन ने 10 करोड़ से अधिक शौचालय बनवाकर ग्रामीण स्वच्छता में क्रांतिकारी बदलाव किया। महिला आरक्षण विधेयक पारित कर महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी में अधिक अधिकार दिए गए। ये सुधार ''राष्ट्र प्रथम'' की भावना को साकार करते हैं, क्योंकि जब समाज का हर वर्ग सुरक्षित, सशक्त और समान अवसरों से लैस होता है, तो यह देश की समग्र प्रगति, सामाजिक स्थिरता और राष्ट्रीय शक्ति को मजबूती प्रदान करता है।

अंतरराष्ट्रीय बचाव कार्य

भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपने नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोपरि माना है। 2013 में ऑपरेशन राहत के दौरान उत्तराखंड की भीषण बाढ़ में एक लाख से अधिक लोगों को सुरक्षित निकाला गया। 2021 में अफ़ग़ानिस्तान से तालिबान के कब्ज़े के बाद ऑपरेशन देवी शक्ति के तहत भारतीयों और अन्य नागरिकों को सुरक्षित भारत लाया गया। 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध के समय ऑपरेशन गंगा के तहत 22,500 से अधिक छात्रों को एयरलिफ्ट कर स्वदेश लाया गया। 2023 में इज़रायल-हमास संघर्ष के समय ऑपरेशन अजय के तहत 2000 से अधिक भारतीय सुरक्षित लौटे। ये सभी अभियान दिखाते हैं कि भारत किसी भी परिस्थिति में अपने नागरिकों को असुरक्षित नहीं छोड़ता और उनके लिए निर्णायक कदम उठाता है।

'ऑपरेशन सिंदूर' - राष्ट्र प्रथम का सबसे सशक्त रूप

22 अप्रैल 2025 को पहलगाम (जम्मू-कश्मीर) में हुए एक घातक आतंकी हमले के बाद भारत ने 7 मई की रात 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान व पाकिस्तान -अधिगृहित कश्मीर में चुनिंदा ठिकानों पर ड्रोन और मिसाइल/एयर स्ट्राइक्स किए । पाकिस्तान के लिए यह सचमुच अविश्वसनीय था। उसने कभी नहीं सोचा था कि भारत इस तरह से जवाब देगा। भारत का कहना था कि ये हमले आतंकी ढाँचों - जैसे लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े ठिकानों पर किए गए, परंतु पाकिस्तान ने इन दावों को नकारते हुए नागरिक ठिकानों पर हमलों और हताहतों का आरोप लगाया। इस कार्रवाई के बाद दोनों ओर से सीमापार गोलाबारी, हवाई सक्रियता और ड्रोन-प्रतिघात तेज़ हुए। चार दिनों तक तनाव तेज़ रहने के बाद 10 मई 2025 युद्धविराम हो गया। यह प्रकरण दिखाता है कि भारत ने सीमित, लक्ष्यबद्ध और संदेशात्मक बल-प्रयोग के साथ ''राष्ट्र प्रथम'' को कार्यरूप में लागू किया, यानी आतंक-समर्थित ढाँचों पर प्रहार करते हुए भी संकट-प्रबंधन और नियंत्रित उन्नयन की सावधानी बरती। सुरक्षा और रक्षा का क्षेत्र 'राष्ट्र प्रथम'' नीति का सबसे स्पष्ट प्रतिबिंब है। वर्तमान सरकार ने देश की सीमाओं की मजबूती और नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इसी क्रम में, राफेल लड़ाकू विमान

जैसे आधुनिक हथियारों का अधिग्रहण किया गया है, ताकि वायु सुरक्षा और युद्ध क्षमता में सुधार हो। आतंकवाद और किसी भी बाहरी खतरे के खिलाफ सख्त कदम उठाने से देश की सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इस प्रकार रक्षा, सुरक्षा और राफेल जैसे आधुनिक उपकरणों के माध्यम से राष्ट्र की संप्रभुता और विकास को सुनिश्चित करना, ''राष्ट्र प्रथम'' की नीति का वास्तविक क्रियान्वयन है।

राष्ट्र प्रथम का नवीनतम उदाहरण

भारत अंतरराष्ट्रीय दबावों की जगह राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को ऊपर रखता है। अंतरराष्ट्रीय दबावों को अनदेखा कर रूस से तेल की खरीद इसका स्पष्ट प्रमाण है, क्योंकि 1.4 अरब नागरिकों के लिए ऊर्जा सुरक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। भारत का रुख साफ़ है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों के साथ समझौता नहीं करेगा। देश का मानना है कि रूस से तेल और सैन्य उपकरण खरीदना उसकी आर्थिक और सामरिक सुरक्षा के लिए आवश्यक है। रूस से सस्ता कच्चा तेल मिलने से भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। हमारा देश किसी भी अन्य देश के दबाव में अपनी विदेश नीति को नहीं बदलेगा, खासकर जब बात उसकी रणनीतिक स्वायत्तता की हो। भारत ने बार-बार यह प्रश्न उठाया है कि यदि अमेरिका रूस से तेल खरीदने पर भारत पर टैरिफ लगाता है, तो यूरोपीय देशों को छूट क्यों देता है, जबकि वे रूस से कहीं अधिक तेल और गैस खरीदते हैं? यह अमेरिका की दोहरी नीति को दर्शाता है, जिसे भारत अनुचित और अविवेकपूर्ण मानता है। साथ ही, भारत सरकार अपने घरेलू उद्योगों, विशेषकर कृषि और डेयरी क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए दृढ़ संकल्पित है। अमेरिका इन क्षेत्रों में अपने उत्पादों के लिए भारत में बाज़ार खोलना चाहता है, किंतु भारत इसे अपने किसानों और अर्थव्यवस्था के लिए जोखिमपूर्ण मानता है।

यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि भारत अपनी नीतियों में सदैव ''राष्ट्र प्रथम'' की भावना को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

आलोचनात्मक दृष्टि

यह भी सत्य है कि इतने बड़े देश में सभी समस्याओं का समाधान एक दशक में संभव नहीं। बेरोज़गारी, ग्रामीण गरीबी, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। आलोचक सरकार के कुछ निर्णयों - जैसे नोटबंदी या कुछ नीतियों के क्रियान्वयन को लेकर सवाल उठाते हैं। परंतु यह भी स्पष्ट है कि राष्ट्रहित में लिए गए कठोर निर्णय हमेशा सभी को तुरंत संतोषजनक नहीं लगते। ''राष्ट्र प्रथम'' की नीति जितनी आदर्श लगती है, उसे लागू करने में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। राष्ट्रहित और व्यक्तिगत अधिकारों के बीच टकराव हो सकता है, राजनीतिक दल अपने स्वार्थ पूरे करने के लिए इस नारे का इस्तेमाल कर सकते हैं, और कुछ फैसले आर्थिक नुकसान या क्षेत्रीय असमानता को जन्म दे सकते हैं। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी केवल राष्ट्र प्रथम सोचकर लिए गए निर्णय अंतरराष्ट्रीय संबंधों और व्यापार को प्रभावित कर सकते हैं। इन समस्याओं का समाधान संतुलित दृष्टिकोण से संभव है। सरकार को राष्ट्रहित और नागरिकों के अधिकारों के बीच सामंजस्य बनाना होगा। नीतियों में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने से राजनीतिक दुरुपयोग रोका जा सकता है। आर्थिक नीतियाँ ऐसी हों जो दीर्घकालिक लाभ दें और साथ ही क्षेत्रीय असमानता को कम करें। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी राष्ट्र प्रथम की सोच को सहयोग और साझेदारी के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इस प्रकार विवेकपूर्ण और संतुलित दृष्टिकोण अपनाकर ''राष्ट्र प्रथम'' की नीति को सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है।

निष्कर्ष

''राष्ट्र प्रथम'' का अर्थ है - राष्ट्र सर्वोपरि। यह केवल नेताओं या सरकार की जिम्मेदारी नहीं बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है। यह सिखाता है कि राष्ट्रहित में सोचना और कार्य करना ही वास्तविक देशभक्ति है। यदि हम सभी अपने जीवन में ''राष्ट्र प्रथम'' को सर्वोच्च मानकर चलें तो भारत न केवल विश्वगुरु बनेगा बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सशक्त, समृद्ध और गौरवशाली भविष्य सुनिश्चित करेगा।



राजभाषा हिंदी : संवैधानिक आधार, प्रशासनिक महत्त्व और विकास यात्रा

श्री प्रभात कुमार शर्मा, उप निदेशक (राजभाषा)

भारत विश्व के उन देशों में शामिल है जहाँ भाषायी विविधता अत्यंत व्यापक है। देश के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ प्रचलित हैं। ऐसी स्थिति में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह आवश्यक था कि शासन-प्रशासन के लिए ऐसी भाषा निर्धारित की जाए जो अधिकाधिक भारतीयों द्वारा समझी जा सके तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाए। हिंदी इस आवश्यकता को पूरा करने वाली भाषा के रूप में सामने आई। यही कारण है कि भारतीय संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा का स्थान प्रदान किया गया।

राजभाषा हिंदी केवल सरकारी कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रशासन और जनता के बीच संवाद स्थापित करने का प्रभावी माध्यम भी है। वर्षों के सतत प्रयासों से हिंदी ने शासन, तकनीक, शिक्षा, विज्ञान, मीडिया और जनसंचार के क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। आज हिंदी भारत की सांस्कृतिक पहचान और प्रशासनिक कार्यप्रणाली दोनों की प्रमुख भाषा बन चुकी है।

राजभाषा हिंदी के संवैधानिक प्रावधान

भारतीय संविधान के भाग-17 (अनुच्छेद 343 से 351) में राजभाषा संबंधी विस्तृत प्रावधान किए गए हैं। संविधान निर्माताओं ने भाषा के प्रश्न को अत्यंत गंभीरता और संतुलन के साथ देखा। उनका उद्देश्य था कि देश की भाषाई विविधता को बनाए रखते हुए हिंदी का क्रमिक विकास किया जाए।

अनुच्छेद 343 : संघ की राजभाषा

इसके अनुसार

- संघ की राजभाषा हिंदी होगी।
- हिंदी की लिपि देवनागरी होगी।
- अंकों का रूप अंतरराष्ट्रीय स्वरूप में होगा।

संविधान लागू होने के समय यह व्यवस्था की गई कि प्रारंभिक 15 वर्षों तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग सरकारी कार्यों में जारी रहेगा, ताकि प्रशासनिक कार्यों में किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न न हो।

अनुच्छेद 344 : राजभाषा आयोग और संसदीय समिति

इस अनुच्छेद के अंतर्गत राजभाषा आयोग तथा संसदीय समिति के गठन का प्रावधान किया गया, जिनका उद्देश्य हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना तथा आवश्यक सुझाव देना था।

अनुच्छेद 345 से 347 : राज्यों की भाषाएँ

इन अनुच्छेदों में राज्यों को अपनी राजभाषा चुनने का अधिकार दिया गया। इससे भारतीय संघ की भाषाई विविधता को सम्मान मिला।

अनुच्छेद 348 : उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों की भाषा

इस अनुच्छेद के अनुसार उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय तथा विधायी दस्तावेजों में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की व्यवस्था की गई।

अनुच्छेद 351 : हिंदी के विकास का निदेश

यह अनुच्छेद हिंदी के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसमें केंद्र सरकार को निदेश दिया गया है कि हिंदी का विकास इस प्रकार किया जाए कि वह भारत की समग्र संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। साथ ही हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को अपनाने पर भी बल दिया गया।

राजभाषा अधिनियम, 1963

संविधान में निर्धारित 15 वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद प्रशासनिक कार्यों की व्यावहारिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राजभाषा अधिनियम, 1963 बनाया गया। यह अधिनियम हिंदी और अंग्रेजी के प्रयोग से

संबंधित व्यवस्थाओं को स्पष्ट करता है।

अधिनियम की प्रमुख विशेषताएँ

- संसद में कार्य का संव्यवहार : हिंदी अथवा अंग्रेजी में किया जा सकता है।
- हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग : केंद्र सरकार के कार्यों में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के प्रयोग की व्यवस्था जारी रखी गई।
- सरकारी दस्तावेजों का द्विभाषी स्वरूप : अधिसूचनाएँ, नियम, सामान्य आदेश, संकल्प, प्रतिवेदन, निविदा, परमिट, संसद को प्रस्तुत किये जाने वाले कागजात आदि अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने की व्यवस्था की गई।
- संसदीय राजभाषा समिति का गठन : केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के निरीक्षण के लिए 30 सदस्यों वाली समिति का गठन जिसमें 20 लोकसभा सांसद और 10 राज्य सभा सांसद शामिल हैं। इसके अध्यक्ष माननीय केंद्रीय गृह मंत्री होते हैं।

राजभाषा नियम, 1976

राजभाषा अधिनियम को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए राजभाषा नियम, 1976 बनाए गए। इन नियमों ने सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्पष्ट व्यवस्था निर्धारित की।

क्षेत्रों का वर्गीकरण

राजभाषा नियमों के अंतर्गत भाषायी दृष्टि से देश को तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया -

'क' क्षेत्र : उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, हरियाणा, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, दिल्ली, अंडमान निकोबार द्वीप समूह

'ख' क्षेत्र : महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, चंड़ीगढ़, दमण एवं दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली

'ग' क्षेत्र : वे सभी राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र जो 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों में नहीं हैं।

इस वर्गीकरण का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों की भाषायी परिस्थितियों के अनुसार हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना था।

राजभाषा नियमों के प्रमुख प्रावधान

- केंद्र सरकार के कार्यालयों में पत्राचार में हिंदी का प्रयोग।
- हिंदी में टिप्पण एवं मसौदा तैयार करना।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना।
- आवेदन, अभ्यावेदन या अपील हिंदी/अंग्रेजी में दिया जाना।
- हिंदी में प्रवीणता।
- हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान।
- मैनुअल, संहिता, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, स्टेशनरी सामग्री आदि द्विभाषी रूप में होना।
- अनुपालन का उत्तरदायित्व कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का होना।

इसके अतिरिक्त अन्य व्यवस्थाएं :

राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन : कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है ताकि हिंदी प्रयोग की नियमित समीक्षा हो सके। इसके अध्यक्ष कार्यालय प्रधान होते हैं और उनकी अध्यक्षता में प्रत्येक तिमाही में इसकी बैठक अनिवार्य है।

वार्षिक कार्यक्रम : राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय प्रत्येक वर्ष हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है जिसमें विभिन्न मदों के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

प्रशिक्षण : राजभाषा विभाग द्वारा केंद्र सरकार के कर्मचारियों को उनकी पात्रता के अनुसार कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, पारंगत, हिंदी आशुलिपि एवं हिंदी टंकण के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा

राजभाषा हिंदी की यात्रा निरंतर प्रगति, विस्तार और स्वीकार्यता की यात्रा रही है। प्रारंभिक वर्षों में हिंदी का प्रयोग सीमित था, परंतु धीरे-धीरे यह प्रशासनिक कार्यों का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है ।

प्रशासनिक क्षेत्र में विस्तार

समय के साथ सरकारी पत्राचार हिंदी में बढ़ा है,

कार्यालयी प्रपत्र द्विभाषी हुए हैं, रिपोर्ट, अधिसूचनाएँ और प्रकाशन हिंदी में उपलब्ध होने लगे हैं और आज अधिकांश केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी का नियमित प्रयोग हो रहा है।

तकनीकी युग में हिंदी

कंप्यूटर और डिजिटल तकनीक ने हिंदी के विकास को नई दिशा दी है। यूनिकोड ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है और इसके कारण हिंदी टंकण और डिजिटल प्रकाशन सरल हो गया है। अब ई-ऑफिस, ई-मेल, डिजिटल फाइलिंग तथा ऑनलाइन पोर्टलों में हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है।

सोशल मीडिया और वेबसाइट

केंद्र सरकार के अनेक विभाग अपनी वेबसाइट और सोशल मीडिया सामग्री हिंदी में भी उपलब्ध करा रहे हैं।

हिंदी प्रचार-प्रसार के प्रयास

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं -

✦ हिंदी दिवस ✦ हिंदी पखवाड़ा ✦ हिंदी कार्यशालाएँ ✦ निबंध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ ✦ हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम ✦ राजभाषा पुरस्कार योजनाएँ

इन कार्यक्रमों से कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि और आत्मविश्वास बढ़ता है और हिंदी में काम करने की झिझक दूर होती है।

राजभाषा हिंदी का वर्तमान स्वरूप

आज हिंदी केवल प्रशासन की भाषा नहीं रही, बल्कि जनसंचार, तकनीकी संवाद, शिक्षा और शोध तथा डिजिटल मीडिया की भाषा के रूप में भी स्थापित हो चुकी है। विश्व स्तर पर भी हिंदी का प्रभाव बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी का प्रयोग बढ़ा है।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

यद्यपि हिंदी ने उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं जैसेः तकनीकी शब्दावली की जटिलता, कुछ क्षेत्रों में अंग्रेजी पर अधिक निर्भरता और कर्मचारियों में हिंदी प्रयोग का संकोच।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए सरल एवं व्यवहारिक हिंदी को बढ़ावा देना आवश्यक है।

निष्कर्ष

राजभाषा हिंदी भारत की प्रशासनिक व्यवस्था को जनसामान्य से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। संविधान, राजभाषा अधिनियम 1963 तथा राजभाषा नियम 1976 ने हिंदी को मजबूत कानूनी और प्रशासनिक आधार प्रदान किया है। निरंतर प्रयासों के कारण हिंदी आज शासन-प्रशासन के साथ-साथ तकनीक, शिक्षा और जनसंचार के क्षेत्र में भी प्रभावी रूप से स्थापित हो चुकी है। आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिकता तक सीमित न रहे, बल्कि यह कार्य संस्कृति का स्वाभाविक हिस्सा बने। सरल, सहज और जनोन्मुख हिंदी ही राजभाषा नीति के वास्तविक उद्देश्य को सफल बना सकती है।

मन की अभिलाषा



श्री संदीप कुमार,
कार्य सहायक /ए

जिंदगी के हर पड़ाव में, तू फिसल सी गयी।
जिंदगी के हर पड़ाव में, तू फिसल सी गयी।
कभी झूलों में, कभी सड़कों पर,
कभी स्कूलों में, तो कभी राहों पर तू बदल सी गयी।
वक्त ने दिल की दीवारों से, तुझे पोंछ सा दिया,
फिर से तू बन उठी, उम्मीद का आँचल ले के।
जब तू दिल पर, फिर से अपना घर बनाने ही वाली थी,
ये दिल समझकर हो गया।
मां-बाप, घर-समाज, देश ये अब तेरे आशियां बन गये,
जिंदगी के हर पड़ाव में, तू अब बदल सी गयी।।
अब दिल बड़ा ही हुआ था, कि तू फिर से बदल गयी,
तू जान गयी क्या साइकिल, क्या गाड़ी, क्या रिश्ते,
क्या समाज, क्या देश, अब तो तू सन्यासी हो गयी।
जिंदगी के हर पड़ाव में तू फिसल सी गयी।

निदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन

हिंदी अनुभाग

पऊवि की मुंबई/नवी मुंबई स्थित इकाइयों नामतः निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, भारी पानी बोर्ड, नाभिकीय पुनर्चक्रण बोर्ड, विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड, क्रय एवं भंडार निदेशालय एवं परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद की संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के तत्वावधान में इस सभी इकाइयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन संयुक्त रूप से किया जाता है। इनके तहत गत वर्ष इस निदेशालय को सौंपी गई गतिविधियों के साथ-साथ निदेशालय स्तर पर भी कार्यक्रमों /गतिविधियों का आयोजन सुनिश्चित किया गया। इनका विवरण निम्नवत है :

- नराकास की दिनांक 17.06.2025 को आयोजित 41 वीं बैठक में निदेशक, निसेसंप्रनि एवं उप निदेशक (राजभाषा) ने भाग लिया।
- दिनांक 11.6.2025 से 12.6.2025 को संयुक्त हिंदी यूनिकोड कार्यशाला का आयोजन वाशी, नवी मुंबई स्थित विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड द्वारा किया गया ।
- संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के तत्वावधान में माह अगस्त-सितंबर 2025 में 5 संयुक्त हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन पऊनिप द्वारा किया गया।
- माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा इस निदेशालय का निरीक्षण दिनांक 09.07.2025 को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। निरीक्षण के पश्चात ध्यान देने योग्य बातों की मदों एवं आश्वासनों से संबंधित मदों पर कार्रवाई की गई ।
- निदेशालय स्तर पर अगस्त-सितंबर माह में 5 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
- संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के तत्वावधान में 25 सितंबर 2025 को 'हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह' का आयोजन किया गया। इस समारोह में संयुक्त हिंदी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए एवं ''हिंदी की मिठास लोक नृत्यों का उजास'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- नवी मुंबई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन गूगल मीट के माध्यम से किया गया। दिनांक 22.8.2025 को राजभाषा सम्मेलन /उत्सव एवं व्यापार बैठक तथा हिंदी संगोष्ठी में वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने भाग लिया। दिनांक 26.9.2025 को राजभाषा कार्यान्वयन में नराकास की भूमिका विषय पर गूगल मीट के माध्यम से वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने भाग लिया।
- दिनांक 03.12.2025 से 05.12.2025 को संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन निसेसंप्रनि द्वारा वि.सा. भवन में किया गया।
- दिनांक 13.01.2026 को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन क्रभनि द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय थे।
- दिनांक 13.02.2026 को ''संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण एवं प्रश्नावली'' विषय पर संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक अधिकारियों/लेखा अधिकारियों एवं हिंदी पदाधिकारियों हेतु अर्ध-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन निसेसंप्रनि द्वारा किया गया। कार्यशाला में व्याख्याता के रूप में श्री अचलेश्वर सिंह, निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग उपस्थित थे।
- दिनांक 11.03.2026 से 13.03.2026 को संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन एनआरबी द्वारा वि.सा. भवन में किया गया।
- दिनांक 16.02.2026 से 28.02.2026 तक आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत निबंध, नारा लेखन एवं चित्रकथा लेखन प्रतियोगिताओं एवं व्याख्यानों का आयोजन हिंदी माध्यम में भी किया

गया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ठाणे द्वारा 5वीं अखिल भारतीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता 2025 विषय ''राष्ट्र प्रथम'' में निदेशालय के श्री ललित मोहन बाजपेयी, वैज्ञानिक सहायक/सी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इनके अतिरिक्त निदेशालय में राजभाषा कार्या-न्वयन संबंधी अन्य गतिविधियों का आयोजन सुनिश्चित किया जाता है जिनमें शामिल हैं :

- निदेशक की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रत्येक तिमाही में नियमित बैठक।
- अनुभागों का राजभाषा निरीक्षण।
- हिंदी पुस्तकों/पत्रिकाओं/समाचार पत्रों की खरीद।
- परमाणु ऊर्जा राजभाषा प्रोत्साहन योजना (अटॉलिस) का कार्यान्वयन।
- ई-ऑफिस में हिंदी का प्रयोग।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में निदेशक द्वारा भाग लिया जाना तथा इसकी गतिविधियों में निदेशालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा सक्रिय प्रतिभागिता / योगदान देना।
- सभी विशेष गतिविधियों जैसे स्वच्छता पखवाड़ा, सतर्कता जागरूकता सप्ताह आदि में हिंदी में व्याख्यान / प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन करना।

इन सभी आयोजनों/गतिविधियों के साथ-साथ निदेशालय के निदेशक, निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के नेतृत्व में एवं उनकी प्रेरणा से सभी अधिकारी एवं कर्मचारी जिनमें अनुरक्षण इकाइयों में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी भी सम्मिलित हैं, राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में पूर्ण समर्पण एवं निष्ठापूर्वक योगदान देते हैं। इसी का परिणाम है कि गत वर्ष माननीय संसदीय राजभाषा का निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और निदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी लक्ष्यों को पूरा किया जा रहा है।







विश्व हिन्दी दिवस समारोह 2026



हिन्दी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह 2025















आप बीती

श्री बजरंग लाल प्रजापत, तकनीशियन/एफ

माँ-बाप से बढ़कर इस दुनिया में दूसरा कोई रिश्ता है ही नहीं, उनका स्थान और कोई नहीं ले सकता क्योंकि माँ-बाप का प्यार निःस्वार्थ होता है। इस दुनिया में माँ-बाप ही होते हैं जो अपनी औलाद को अपने से ज्यादा सफल बनाने की कोशिश करते हैं। इस पूरे ब्रह्मांड में इनकी तुलना किसी भी चीज से नहीं की जा सकती है। मेरा यह प्रसंग इसी रिश्ते पर आधारित है जोकि मेरे बचपन का है। मेरा गाँव राजस्थान के नागौर जिले में स्थित है। मेरे घर के नजदीक ही हमारे पड़ोसी रहते थे। उनका बड़ा ही सुखी परिवार था, परिवार में तीन भाई व एक बहन थी। इनके माता-पिता इन चारों से बेहद प्यार करते थे, मगर बीच वाले बेटे से थोड़ा परेशान रहते थे। बड़ा व छोटा बेटा बहुत ही होशियार थे, बड़ा बेटा पढ़-लिख कर डॉक्टर बन गया और छोटा बेटा इंजीनियर। मगर बीच वाला बेटा गंवार व आवारा किस्म का था, उसका पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं लगता था। कुछ समय बाद उनके दोनों बेटों (बड़ा व सबसे छोटा) ने शादी कर ली और कुछ महीनों बाद इनकी छोटी बेटी का भी एक अच्छे घराने में विवाह हो गया मगर बीच वाला बेटा अभी भी कुंवारा ही था। वह अनपढ़ था और कहीं पर मजदूरी के छोटे-मोटे काम करता था। उसकी शादी के लिए कोई लड़की भी नहीं मिल रही थी। उसके माँ-बाप उससे बहुत परेशान रहते थे। अब जब भी उसकी बहन अपने मायके आती तो वह अपने डॉक्टर व इंजीनियर भाइयों से मिलती थी मगर बीच वाले भाई से बहुत कम ही मिलती थी क्योंकि वह अपने घर आई बहन को ज्यादा पैसे नहीं दे पाता था । लेकिन फिर भी वह अपनी बहन से बहुत अधिक प्यार करता था। समय के चक्र के साथ पिताजी बीच वाले बेटे की शादी किए बिना ही कालचक्र में समा गए। उनकी माँ पर तो मानो दुःख का पहाड़ ही टूट पड़ा था। धीरे-धीरे समय बीतता गया उनकी माँ ने सोचा कहीं अब किसी के मुँह से बँटवारे की बात निकले उससे पहले ही माँ ने गाँव की ही सीधी-सादी व गरीब लड़की से मंझले बेटे की शादी करवा दी। कहते हैं ना कि बहू व बेटी लक्ष्मी का रूप होती है। जैसे ही बहू के कदम इस घर में पड़े, इसका अनपढ़ बेटा मन लगाकर काम करने लगा और पहले से कहीं ज्यादा मेहनत भी करने लगा। गाँव के कुछ लोगों ने इसके दोनों भाईयों को बँटवारा करने के लिए भ्रमित कर दिया। वो गाँववालों के बहकाने में आकर, एक दिन, दोनों भाईयों ने सोचा कि हमारा बीच वाला भाई तो अनपढ़-गंवार है, हम इससे कहीं ज्यादा पैसे कमा लेते हैं, कहीं हमारी माँ इसकी गरीबी देखकर कहीं सारी वसीयत इसके नाम न कर दें इसलिए उन्होंने माँ से बँटवारा करने के लिए कह दिया। माँ के लाख मना करने के बाद भी दोनों बेटों ने बँटवारे की तारीख तय कर दी और उन्होंने अपनी बहन को ससुराल से बुला लिया। तभी उनका गंवार भाई कहता है कि तुम लोग वसीयत का आपस में बँटवारा कर लो, मुझे जो बचे वो देना या नहीं भी दोगे तो भी चलेगा । मैं शाम को आकर कागजात पर अंगूठा लगा दूँगा। तभी उसकी बहन कहती है कि अरे! बेवकूफ तू तो हमेशा बेवकूफ ही रहेगा। जमीन का बँटवारा तो हमेशा आमने-सामने बैठकर ही होता है। इस तरह उसकी माँ भी उसे काम पर जाने से रोकती है। उसी वक्त वकील साहब भी आ जाते हैं और वसीयत के कागज देखने लगते हैं। और सारे कागजात देखकर बोलते हैं कि आपका सारा हिस्सा मिलाकर 10 बीघा जमीन और एक मकान है और अब यह बताओ कि किसको कितना हिस्सा देना है, मैं उसी हिसाब से सारे कागज बना दूँगा। तभी गंवार भाई कहता है वकील साहब 5-5 बीघा जमीन हमारे दोनों भाईयों के नाम लिख दो और यह हमारा घर, मेरी प्यारी बहन के नाम कर दो। तभी दोनों भाई पूछते हैं, भाई तू अपने हिस्से में क्या लेगा? गंवार भाई कहता है पापा तो चल बसे, मेरे हिस्से में मेरी प्यारी माँ है। वह अपनी पत्नी की

तरफ देखता है और मुस्कुराते हुए कहता है क्यों मैंने कुछ गलत कहा क्या? उस गंवार और अनपढ़ की पत्नी की आँखों में आँसू आ जाते हैं और सिसककर अपनी सास के लिपट जाती है और कहती है कि हमारे लिए 'माँ' से बड़ी वसीयत क्या होगी। उसी समय उसका पति भी भावुक होकर माँ के गले लग जाता है। गंवार बेटे और बहू के प्यार ने जमीन-जायदाद के बँटवारे को एक सन्नाटे में बदल दिया। तभी बहन अपने गंवार भाई के गले लग कर लिपट कर रोते हुए कहती है कि माफ़ कर दो भैया, मैं आपको सम्मान नहीं दे सकी। तभी उसका भाई कहता है मेरी प्यारी बहन... इस घर में जितना अधिकार हमारा है उतना ही तुम्हारा भी है और रही बात बँटवारे की, तो बँटवारा नहीं करने से जीवन ख़त्म तो नहीं हो जाएगा। क्यों करते हैं हम बँटवारा? क्या हम एक-साथ मिलकर नहीं रह सकते। जैसे हम बचपन में खेला करते थे और हमेशा मिलजुल कर रहते थे। एक साथ मिलजुल रहने को ही कहते हैं एक अच्छा परिवार और ऐसे परिवार को सँभालते हैं माँ और पापा। तभी उसके दोनों भाई बहुत शर्मिंदा होते हैं और बँटवारे के सभी कागज फाड़ कर अपने छोटे भाई को गले लगा लेते हैं। वो दोनों अपनी माँ से भी माफ़ी माँगते हैं। माँ तो ईश्वर का ही दूसरा रूप है वह तो कृपा का भंडार है वह अपने दोनों बेटों को माफ़ कर देती है। और इस तरह उनका परिवार आज तक ख़ुशी-ख़ुशी एक साथ रह रहा है। मैंने इस प्रसंग को बहुत करीब से देखा है। यह प्रसंग मेरे दिल में घर कर गया और आज यह आपके साथ साझा कर बड़े हर्ष की अनुभूति हो रही है। माँ बाप भगवान का ही दूसरा रूप होते हैं जिस घर में माँ-बाप विराजित हैं, वह स्वर्ग के बराबर है। हम सभी को उनका सम्मान करना चाहिए। जितनी हो सके उनकी सेवा करनी चाहिए, जो कि हमारा परम कर्तव्य है। हम शायद भूल जाते हैं कि कितने कष्ट झेलकर उन्होंने हमें जन्म से लेकर बड़े होने तक परेशानियों का सामना किया है। माता-पिता का कर्ज हम चाह कर भी कभी नहीं उतार सकते इसलिए जितनी हो सके उनकी सेवा कर उनका कहना मानें, उन्हें हमेशा अपने साथ रखें और जो भी उनकी इच्छा है उसे पूर्ण करने की कोशिश करें। मैं अपनी आपबीती इन लाइनों के द्वारा समाप्त करना चाहूँगा।

नींद अपनी भुला के सुलाया हमको,
आँसू अपने गिरा के हँसाया हमको,
दर्द कभी न देना उस खुदा की तस्वीर को,
जमाना मात-पिता कहता है जिनको।
भूलना नहीं पिता का प्यार,
ना भुलाना अपनी 'माँ' का दुलार,
जिस मात-पिता ने हमें जीवन दिया,
जीवन भर करना उनका सम्मान।।

निसेसंप्रनि दिवस



श्री विनोद कुमार मालाकार
कार्य सहायक/बी

निसेसंप्रनि दिवस, DCSEM का त्योहार है।
होता इस दिन DCSEM का श्रृंगार है।
ज्येष्ठ में लगता, बसंत की फुहार है।
खुशियाँ मनाने का सबसे दिलों में बहार है।
निसेसंप्रनि दिवस, DCSEM का त्योहार है।
निसेसंप्रनि दिवस, DAE के गरिमा का गुणगान है।
DCSEM के TTMs, MRS, MPH, PHS, H&CMS,
की कहानी का व्याख्यान है।
निसेसंप्रनि दिवस, हम सबका अभिमान है।
आता है हर दो वर्ष में, लाता है।
नई उम्मीद, नई उमंग, नई चेतना की बौछार है।
Pris-G, Pris-I, Pris-O इससे मिलता उपहार है।
निर्माण में मशहूर है।
अथक परिश्रम से करता परमाणु ऊर्जा के
सपने साकार हैं।
परमाणु ऊर्जा विभाग के सच्चे सूत्रधार हैं।
हमें मिलता विश्वकर्मा Award है।
आगाज निराला, अंदाज निराला,
Tender करता बेशुमार है।
इससे बढ़ती DAE की पहचान है।
इस दिन होता परमाणु ऊर्जा विभाग का सत्कार है।
निसेसंप्रनि दिवस, DCSEM का संस्कार है।
DAE/DCSEM के सम्मान में
इस दिन होता निर्माण पत्रिका का प्रकाशन शानदार है।
निसेसंप्रनि दिवस, DCSEM का त्योहार है।



जन्नत-ए-कश्मीर : एक अविस्मरणीय सफर

श्रीमती रेश्मा रा. मगरे, सहायक

यह बात फरवरी 2025 की है। मैंने अपने पति से कहा कि मई की छुट्टियों में अपने दोस्तों के साथ किसी ठंडी जगह पर घूमने जाते है। 2 फरवरी रविवार की छुट्टी के दिन हमारे दोस्त हमारे घर आए। काफी समय सोच विचार करके सबका कश्मीर जाने के लिए एकमत हुआ। कई कश्मीर टूर पॅकेज वालों से बात करने के बाद हमने एक 6 दिन सात रातों का पॅकेज फाइनल किया, जिसमे होटेल में रहना और खाना शामिल था। उस पॅकेज का नाम था - जन्नत-ए-कश्मीर।

कुल चार परिवार कश्मीर ट्रिप पर जाने वाले थे। सभी मिलाकर हम 12 लोग थे, जिसमे चार छोटे बच्चे बाकी छह बड़े लोग थे। हमने उस पॅकेज वाले को ट्रिप के पैसे अडवान्स में दे दिए और बुकिंग करवाली। मैंने तो कश्मीर जाने के लिए बहुत ही उत्सुख थी। ऐसे लग रहा था कि कब मई महीना आएगा और मैं कश्मीर की ठंडी ठंडी वादियों में घुमुंगी। हम सब ने अपने मुंबई से कश्मीर की 2 मई की और 10 मई की लौटने की हवाई जहाज की टिकिट भी निकाली। हमने खूब सारी नए नए कपड़ो, दो बड़ी बॅग, जरूरी सामानों की शापिंग भी की। अब बस 2 मई का इंतजार था।

फिर अचानक 22 अप्रैल 2025 को कश्मीर के पहलगाम जिले के बैसरन गांव में आंतकवादियों द्वारा कुछ घुमने आए पर्यटकों पर गोलिया से हमले की खबर सुनी। खबर में कहा गया था कि चार हमलावर थे जिन्होंने लगभग 26 पर्यटकों की हत्या कर दी और कई अन्य घायल हो गए। हमले की तस्वीरें सभी टीवी चैनलों पर दिखाई गईं। पुलिस के पहुँचने और स्थिति को संभालने से पहले ही हमलावर भाग गए। सरकार ने कहा कि 2019 में केंद्र द्वारा जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त करने के बाद से यह कश्मीर में नागरिकों पर पहला बड़ा आतंकी हमला था। हमें उन पीड़ितों के लिए बहुत दुख हुआ जो छुट्टियां मनाने कश्मीर गए थे। इस हमले से पूरा देश अशांत था। सरकार ने सभी बचे हुए परिवारों को सुरक्षित उनके गृह नगर वापस भेज दिया था। देश की जनता गुस्से में थी और उन्होंने सरकार से आवश्यक कदम उठाने का आग्रह किया।कश्मीर घूमने के लिए बुकिंग कराने वाले कई लोग डर के मारे अपनी यात्राएँ रद्द करने लगे। आतंकी हमले का कश्मीर के पर्यटन क्षेत्र पर बहुत बुरा असर पड़ा। चूँकि कश्मीर की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा पर्यटन पर आधारित है, इसलिए कश्मीरी लोगों को डर था कि कहीं उनकी रोजी रोटी बंद न हो जाए। कश्मीर की अर्थव्यवस्था को फिर से गति देने के लिए, सरकार ने लोगों से बिना किसी डर के कश्मीर घूमने की अपील की, और सभी पर्यटन स्थलों पर कड़ी पुलिस सुरक्षा व्यवस्था की गई। फिर भी, लोग कश्मीर घूमने से कतरा रहे थे।

कश्मीर में तनावपूर्ण स्थिति और डर के कारण, हमारे समूह के दो परिवारों ने कश्मीर यात्रा रद्द कर दी। अब केवल मेरा परिवार और एक अन्य परिवार कश्मीर जाने के लिए तैयार था। हमें अपनी सरकार, पुलिस फोर्स और कश्मीर के लोगों पर भरोसा था, इसलिए हमने 2 मई को अपनी कश्मीर यात्रा योजना के अनुसार शुरू की। हम मुंबई के हवाईअड्डे पर पहुँचे और श्रीनगर के लिए अपनी उड़ान में सवार हुए। श्रीनगर हवाई अड्डे पर सुरक्षा बहुत कड़ी थी। शुरू में हमें थोड़ा डर लगा, लेकिन लोग इतने विनम्र और सहयोगी थे कि हमने अपनी यात्रा खुशी के साथ शुरू की। हमारा टूर वाहन हवाई अड्डे पर लेने आया था। हमारा पहला गंतव्य पहलगाम था जहाँ हमला हुआ था। पर्यटन स्थलों में शायद ही कोई पर्यटक दिखाई दे रहा था। सभी जगह कड़ी सुरक्षा थी और प्रतिबंधों के कारण कई स्थान बंद थे। पहलगाम में प्राकृतिक दृश्य और मौसम बहुत सुंदर था। पहलगाम के बाद हम डल झील, सोनमर्ग और गुलमर्ग गए। कश्मीर की हसीन वादियों में घूमने का मजा ही कुछ और था। हमें खुशी

हुई कि हमने कश्मीर की अपनी यात्रा रद्द नहीं की। कश्मीर के लोग बहुत विनम्र, अच्छे और मृदुभाषी थे। खाना, होटल जहाँ हम रुके, सब बढ़िया था।

7 मई को, अचानक हमें भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान सरकार के खिलाफ शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर के बारे में पता चला। भारतीय सेना ने एलओसी के पास पड़ोसी देश पाकिस्तान पर हमला करके यह दिखा दिया कि हम आतंकी हमले की निंदा करते हैं और अपने देश पर किसी भी आतंकी हमले को बर्दाश्त नहीं करेंगे। कश्मीर में सब कुछ फिर से रुक गया। हम पूरे दिन श्रीनगर के होटल में रहे। रात के समय, पूरी तरह से अंधेरा छा गया और भारत और पाकिस्तान सेना द्वारा किए गए ड्रोन हमले की आवाज सुनी जा सकती थी। हम होटल की सभी लाइटें बंद करके अंदर ही रहे और मुंबई सुरक्षित लौटने की प्रार्थना करते रहे। एहतियात के तौर पर, सरकार ने 8 मई से श्रीनगर हवाई अड्डे को बंद कर दिया था। दुर्भाग्य से 10 मई को श्रीनगर से मुंबई की हमारी उड़ान 13 मई तक के लिए स्थगित कर दी गई। चूँकि वहाँ और रुकना संभव नहीं था, इसलिए हमने सड़क मार्ग से जम्मू स्टेशन जाने और वहाँ से ट्रेन द्वारा मुंबई या दिल्ली जाने का विचार किया। मोबाइल नेटवर्क की समस्या होने के कारण, मैंने अपने मुंबई के दोस्त से 10 मई शाम के लिए जम्मू तवी स्टेशन से नई दिल्ली के लिए ऑनलाइन ट्रेन टिकट बुक करने का अनुरोध किया। टिकट 10 मई शाम 7 बजे से बुक हो गए।

8 मई को भारी बारिश के कारण, श्रीनगर से जम्मू जाने वाले एकमात्र सड़क मार्ग NH44 पर भूस्खलन हुआ। यह सड़क 24 घंटे तक बंद रही। सड़क में दोनों तरफ ट्रैफिक जाम हो गया थी और गाडियाँ एक ही जगह पर लम्बे समय से खड़ी थीं। भूस्खलन सड़क को खोलने के लिए जम्मू कश्मीर पुलिस ने काफी प्रयास किए। आखिरकार 11 मई की सुबह सड़क खुल पाई। ट्रेन पकड़ने के लिए हमने श्रीनगर से जम्मू-तवी स्टेशन जाने के लिए एक 6 सीटर गाड़ी किराए पर ली थी। 11 मई की सुबह हम श्रीनगर में होटल से निकले और अपनी वापसी यात्रा शुरू की। कश्मीर में फंसे कई लोग सड़क मार्ग से जम्मू जा रहे थे। रास्ते में हमारी गाड़ी का एक छोटा सा एक्सीडेंट हुआ और आगे चल रहे ट्रक से टकरा गई। गाड़ी के आगे के हिस्से, टेल लाइटें टूटी हुई थीं, ब्रेक फेल हो गए थे और तेल लीक हो रहा था। हाईवे पर कोई गॅरेज न होने के कारण ड्राइवर ने गाड़ी एक तरफ़ लगाई और खुद ही मरम्मत करने लगा। कुछ दूसरे ट्रक ड्राइवरों ने भी उसकी मदद की। हमें डर था कि अब हम जम्मू स्टेशन कैसे पहुँचेंगे। लेकिन ईश्वर की कृपा से एक घंटे बाद गाड़ी की मरम्मत पूरी हो गई और हमने अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी।

जम्मू के रास्ते में हमारे ड्राइवर ने दूर पहाडों का स्थित वैष्णोदेवी का मंदिर दिखाया। हमने हाथ जोड़कर देवी से सकुशल घर वापसी की प्रार्थना की। हम शाम लगभग 4 बजे जम्मू तवी स्टेशन पहुँचे। स्टेशन पर लोगों की खूब भीड़ थी। सभी लोग जम्मू से ट्रेन पकड़कर वहाँ से जल्द से जल्द निकलना चाहते थे। तभी हमें रेलवे से संदेश मिला कि हमारी शाम 7 बजे वाली ट्रेन अगले दिन सुबह 10 बजे के लिए बदल दी गई है। रात में पाकिस्तानी सेना द्वारा जम्मू शहर पर भी ड्रोन हमले किए जाने के कारण, वहां रुकना हमें सुरक्षित नहीं लगा। इसलिए हमने स्थानीय परिवहन बस से जम्मू शहर छोड़ने की योजना बनाई। हमने जम्मू से नई दिल्ली के लिए रात 9 बजे की स्लीपर कोच बस बुक की। उसी बस का इंतजार कर रहे सभी लोग बहुत डरे हुए थे। तभी हमने दो देशों के बीच युद्ध विराम की खबर समाचार में सुना। हम खुश थे कि युद्ध रुक गया। हम रात 9 बजे बस में सवार हुए और यात्रा शुरू की। बस अंधेरी रात में चली गई। मैंने अपनी आँखें बंद कीं और प्रार्थना करते हुए सो गई। अगले दिन सुबह जब मैं उठी तो हम पंजाब में थे। हमारी बस खराब हो गई थी। हमें दूसरी बस में बिठाया गया और फिर से यात्रा शुरू हुई। हम सुबह 9 बजे नई दिल्ली बस डिपो पहुँचे। हमने एक टैक्सी ली और नई दिल्ली हवाई अड्डे पहुँचे। टिकट की दरें बहुत ज़्यादा थीं। लगातार यात्रा के कारण हम बहुत थके हुए थे, इसलिए हमने ज़्यादा टिकट दरों की परवाह नहीं की। हमें दोपहर 2:30 के उड़ान की आखिरी 6 टिकट मिले। चूँकि हमें बहुत भूख लगी थी, हमने एयरपोर्ट होटल में

थोड़ा नाश्ता किया और ठीक 2 बजे अपनी उड़ान में सवार हो गए। आश्चर्य की बात यह थी कि हमें जो सीटें मिलीं, वे आपातकालीन निकास द्वार के बगल में थीं। मुझे बहुत चिंता थी कि क्या हम मुंबई सुरक्षित उतर पाएँगे। हमारी उड़ान दोपहर 2:30 बजे रवाना हुई और शाम 5:30 बजे मुंबई पहुँच गई। हमने एक टैक्सी ली और शाम 6:30 बजे अपने घर पहुँच गए।

श्रीनगर से मुंबई की वापसी यात्रा, जो सड़क, बस और फिर हवाई जहाज़ से हुई, बेहद डरावनी थी। हमने ऑपरेशन सिंदूर, ड्रोन हमले, भूस्खलन, गाड़ी का एक्सीडेंट, हवाई जहाज, ट्रेन का स्थगन आदि सभी का अनुभव हुआ। ऐसी स्थिति के बावजूद, कश्मीर के लोगों ने हमारी मदद की और हमारा ख्याल रखा। कश्मीर की मेरी यात्रा बेहद मनमोहक और यादगार रही। कश्मीर की खूबसूरत जगहों और कश्मीरी लोगों की मीठी यादें मेरे दिल में हमेशा के लिए बसी रहेंगी। सच ही कहा गया है कि दुनिया में कश्मीर जैसी कोई दूसरा जगह नहीं है। कश्मीर धरती पर स्वर्ग के समान है। सच ही कहा गया है - जन्नत है कश्मीर।



''उड़ान से डरती नहीं, सोच से लड़ती औरत''

श्रीमती संजू कुमारी
प्रभारी वास्तुविद (संपर्क कार्य)

आधुनिक औरतें, अब सिर्फ़ चौखटों तक सीमित नहीं रहती,
अपने सपनों की खातिर, हर दीवार से लड़ती रहती।
कभी दफ़्तरों में फैसले लिखती है, कभी अस्पतालों में ज़िंदगी बचाती है,
कभी घर की जिम्मेदारियों के बीच, खुद को भी संभाल जाती है।
वो भीड़ में अपनी पहचान बनाती है, हर नए शहर में हिम्मत से मुस्कुराती है,
मुश्किल चाहे जितनी आए, हर दर्द में भी राह बनाती है।
मगर अफसोस...
उसकी मेहनत से पहले, उसका ''औरत होना'' देखा जाता है,
उसके हुनर से पहले, उसका चेहरा तौला जाता है।
जो पुरुष देर तक काम करे, तो समर्पित कहलाता है,
और वही काम अगर वो करे, तो सवाल उठाया जाता है।
ऑफिसों में उसकी आवाज़, कई बार दबा दी जाती है,
उसकी मेहनत की चमक भी, किसी और के नाम कर दी जाती है।
अगर वो सच कह दे, तो उसे ''ज़िद्दी'' बताया जाता है,
और चुप रह जाए, तो कमज़ोर समझा जाता है।
गांव की गलियों में, अब भी सोच पुरानी मिलती है,
जहाँ खुलकर जीने वाली स्त्री, अक्सर ''आवारा'' कहलाती है।
फिर भी वो रुकती नहीं, हर टूटन के बाद भी झुकती नहीं,
क्योंकि उसे पता है - उसकी लड़ाई सिर्फ़ उसकी नहीं।
वो उन सभी आवाज़ों का चेहरा है, जो अब तक दबाई जाती रहीं,
वो उन अधूरे सपनों की लौ है, जो हर हाल में जलती रहीं।
एक दिन ये दुनिया समझेगी, कि स्त्री कमज़ोर नहीं होती,
बस हर दिन - समाज की सोच से लड़ते-लड़ते, थोड़ी थक जाती है।
पर वो रुकती नहीं... क्योंकि उन्हें पता है - जिस दिन यह सोच बदल जाएगी,
उस दिन औरतें सिर्फ आधुनिक नहीं, आजाद कहलाएँगी।



श्रीमती अंजली रविकान्त कारडा
परियोजना वास्तुविद् (ए)

आईना

सुबह की चमक
शाम की थकान
कुछ पाने की आस
होठों की मुस्कान
खुद का चमकना-ढलना देखा,
जब - जब मैंने आईना देखा ...
जब - जब मैंने आईना देखा ...
उम्र का गुज़रना
वक्त का ठहरना
जीवन को जीना
पल - पल का मरना
खुद का गिरना-संभलना देखा,
जब - जब मैंने आईना देखा ...
जब - जब मैंने आईना देखा ...
शहरों का शोर
मन का ठहराव
प्रेम के रिश्ते
फिर भी अलगाव
खुद का सिमटना-बिखरना देखा,
जब - जब मैंने आईना देखा ...
जब - जब मैंने आईना देखा ...
आँखें देखी, सूरत देखी
कभी तंग ज़िंदगी
कभी फ़ुर्सत देखी
खुद को नया पुराना देखा
जब - जब मैंने आईना देखा ...
जब - जब मैंने आईना देखा ...
मुझे सच बताकर
चुप रहते हो सदा
जैसी हूँ वैसे अपनाकर
साथ देते हो सदा
ज़िंदा हूँ मैं,अपने वजूद का होना देखा
जब - जब मैंने आईना देखा ...
जब - जब मैंने आईना देखा ...

यादों की अलमारी

यादों की अलमारी में अब
कुछ बीती यादें बाकी हैं
कुछ बचपन की तस्वीरें हैं
सिमटी सौगातें बाकी हैं
खेल खिलौने साथ बिछौने
गुड़िया बारातें बाकी हैं
हँसी ठहाके,गीत पुराने
नुक्कड़ की बातें बाकी हैं
कुछ सावन यूं ही बीत गए
रिमझिम बरसातें बाकी हैं
सूखे फूल किताबों में रख
कुछ बिछड़े नाते बाकी हैं
कुछ शेर अधूरे छूट गए
मन की फरियादें बाकी हैं
क्या खोया क्या पाया हमने
अपने वो खाते बाकी हैं

खबर नहीं

इस पल भर के जीवन की, हमको कुछ भी तो खबर नहीं
हर ज़िद पूरी हो जाए, इतना आसान ये सफर नहीं
भोलेपन ने चोटें खाईं ,बाकी कुछ भी कसर नहीं
छूटे साथी सारे मुझसे,यूं जीने में फ़क्र नहीं
यूं लाया है तूफां अंधेरा, आएगी अब सहर नहीं
अब संभलकर चलना होगा,रहने लायक ये शहर नहीं
बहुत हुई हर शय की कीमत ,थोड़े में होगी गुज़र नहीं
कर मन से फरियादें तू, दुआएं होती बेअसर नहीं



आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का दौर

श्री संतोष कुमार,
वैज्ञानिक सहायक/डी

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का दौर मुझे इस कदर भाया,
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का दौर मुझे इस कदर भाया
जेब में फूटी कौड़ी न थी, फिर भी EMI पर स्मार्टफोन, टीवी उठा लाया।
अपने ही दोस्तों में बेगाना सा हो गया, मुझे क्या पता था कि
मैं अपनों से दूर होने का सामान खरीद लाया।
पहले पड़ोसी चीनी माँगने घर आते थे,
अब Wi-Fi का पासवर्ड पूछते नज़र आते हैं।
रिश्तों की गर्मी ठंडी हुई, संवाद हुआ बेजान
घर में चार लोग बैठे थे...
पर सबकी उंगलियों में था सिर्फ़ मोबाइल का ध्यान।
अपने बेटे के chatgpt का इस्तेमाल देख मैं मुस्कुराया
उस दिन पड़ा मुझे पछताना जिस दिन हमारा प्राइवेट डेटा इंटरनेट पर छाया।
गोपनीयता का खतरा बढ़ा, डेटा भी चोरी हो जाता,
जो कभी था अपना ही राज़, अब इंटरनेट पर बिक जाता।
गोपनीयता का खतरा भी ऐसा मंडराया,
कल मैंने जूते देखे थे ऑनलाइन...
आज पूरा इंटरनेट जूतों से भर आया।
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का दौर मुझे इस कदर भाया
मैं भी स्मार्ट डिवाइस और 'स्मार्ट वॉच' खरीद लाया
बच्चों ने किताबें छोड़ीं, कॉपी भी तिरस्कृत पाई,
होमवर्क में भी AI आया, मेहनत पीछे रह गई भाई।
अपने बेटे के होमवर्क पर जब AI से उत्तर दिलवाया
उस दिन पड़ा पछताना, जब वह कॉपी में भी "As an AI language model...
मैं आपका होमवर्क करने में असमर्थ हूँ'' लिख आया।
बच्चों के सीखने के तरीके को AI ने बदल दिया,
पहले वो किताबों से सीखते थे, फिर हमने उन्हें AI ट्यूटर से सीखना सिखाया।
Instagram Reel ने ऐसा जादू चलाया, मैं पानी पीने उठा था... तीन घंटे बाद याद आया।
अपना महत्वपूर्ण समय मैंने चैटजीपीटी, इन्स्टाग्राम रील्स और ऑटोमेशन पर बिताया,
जिस प्रोजेक्ट में मुझे खुद बोलना था, वहाँ स्लाइड भी AI से बनवाया।
नौकरी करने वाले अब डर के साए में जीते, रोबोट ऑफिस में बैठे, इंसान गली-गली फिरते।
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का दौर मुझे इस कदर भाया
मैं भी स्मार्ट डिवाइस और AI ऐप्स खरीद लाया।
एल्गोरिदम की जटिलता, डेटा की चिंता और निर्भरता को मैंने अपने पास बुलाया,
ख़ुद सोचने की आदत को धीरे-धीरे मिटाया।
सोचने की ताकत खोकर, इंसान मशीन पे झुका
रचनात्मकता का दीप बुझा, आलस हर मन में रुका
शुक्रवार की उस पूरी रात, मैंने ए.आई. टूल्स के साथ ऐसा दिल लगाया,
कि सुबह होते ही चैटबॉट, रोबोट, अलेक्सा और तीन-चार फ़ास्ट-चार्जर खरीद लाया!
सुविधा के संग आया डर, वरदान बना अभिशाप,
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस ने, बदला इंसान का आप।
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का दौर बड़ा निराला,
फ्लिपकार्ट सेल में आज सुबह ही एक और स्मार्टफोन बुक कर डाला।

स्वच्छता पखवाड़ा - 2026 : स्वच्छता, सहभागिता और जन-जागरूकता का सफल अभियान

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, मुंबई द्वारा दिनांक 16 फरवरी से 28 फरवरी 2026 तक स्वच्छता पखवाड़ा - 2026 का आयोजन अत्यंत उत्साह, व्यापक जनसहभागिता एवं विविध रचनात्मक गतिविधियों के साथ किया गया। पखवाड़े का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाना, सामुदायिक उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करना तथा स्वच्छ एवं स्वस्थ परिवेश के निर्माण हेतु सभी वर्गों की सहभागिता सुनिश्चित करना था।

पखवाड़े का शुभारंभ दिनांक 16 फरवरी को होमी भाभा पार्क, अणुशक्तिनगर स्थित अल्मोड़ा एम्फी थिएटर में हुआ। मुख्य अतिथि श्री जी. श्रीनिवास, महाप्रबंधक, भारी पानी संयंत्र, मनुगुरु तथा अध्यक्षता श्री के. महापात्रा, निदेशक, डीसीएसईएम ने की। कार्यक्रम में स्वच्छता शपथ, अभियान घोषणा, स्वच्छता कार्ययोजना प्रस्तुति एवं कर्मचारियों द्वारा प्रभावी नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। इसी दिन मानखुर्द स्थित बालगृह में स्वच्छता कार्ययोजना अंतर्गत संरचनात्मक मरम्मत, शौचालय नवीनीकरण, पार्किंग विकास तथा अन्य सुविधाओं का उद्घाटन किया गया। पौधारोपण एवं बच्चों को नाश्ता वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पखवाड़े के दौरान दिनांक 17 फरवरी को स्वच्छता विषयक नारा, 18 फरवरी को निबंध एवं प्रश्नोत्तरी तथा 19 फरवरी को चित्रकथा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर स्वच्छता के प्रति अपनी रचनात्मक सोच और प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। इन प्रतियोगिताओं ने स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दिनांक 20 फरवरी को न्यू कम्युनिटी सेंटर पार्किंग क्षेत्र में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें आम, जामुन, सिंदूर, नीम एवं कटहल के पौधे लगाए गए।

दिनांक 21 फरवरी को अणुशक्तिनगर के विभिन्न आवासीय क्षेत्रों में आयोजित प्लॉगिंग अभियान में कर्मचारियों, अधिकारियों एवं निवासी कल्याण संघों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। यह आयोजन सामुदायिक स्वच्छता के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व का प्रेरक उदाहरण रहा।

दिनांक 22 फरवरी को गिरगांव चौपाटी पर बीच क्लीनिंग अभियान चलाया गया, जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों सहित स्वयंसेवकों ने सक्रिय भागीदारी की। इसी दिन अणुशक्तिनगर सुरक्षा के सहयोग से परित्यक्त दोपहिया वाहनों एवं साइकिलों को हटाने हेतु विशेष अभियान संचालित किया गया, जिसके अंतर्गत 247 बेकार वाहनों को हटाकर परिसर की स्वच्छता एवं सुरक्षा सुनिश्चित की गई।

दिनांक 23 फरवरी को कार्य सहायकों एवं संविदा हाउसकीपिंग स्टाफ हेतु स्वच्छता प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, जिनमें स्वच्छता प्रबंधन की व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

दिनांक 24 फरवरी को पश्चिमी सेक्टर बाजार के नवीनीकरण, विषयगत भित्ति-चित्रों, सार्वजनिक शौचालयों एवं दिव्यांग-अनुकूल सुविधाओं का उद्घाटन किया गया, जिससे परिसर की सुंदरता एवं उपयोगिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

दिनांक 25 फरवरी को ओल्ड मंडाला टाउनशिप में श्रमदान कार्यक्रम एवं नुक्कड नाटक आयोजित किये गये।

दिनांक 26 फरवरी को अंबरनाथ स्थित जिला परिषद विद्यालय में शौचालय, रसोईघर एवं अन्य संरचनात्मक नवीनीकरण कार्यों का उद्घाटन किया गया। यह डीसीएसईएम की सामाजिक उत्तरदायित्व भावना का उत्कृष्ट उदाहरण रहा।

दिनांक 27 फरवरी को ओल्ड यॉट क्लब, डीएई के नवीनीकृत शौचालय का उद्घाटन डॉ. अजित कुमार मोहांती, सचिव, डीएई एवं अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग द्वारा किया गया।

निर्माण

दिनांक 28 फरवरी को समापन समारोह भव्य रूप से आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि श्री विनायक भट, मुख्य अभियंता, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, बृहन्मुंबई महानगर-पालिका ने स्वच्छता प्रबंधन एवं अपशिष्ट न्यूनिकरण पर प्रेरक विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर पखवाड़े की उपलब्धियों की प्रस्तुति, पुरस्कार वितरण, नुक्कड़ नाटक तथा ''ईस्टर्न विस्टा'' का लोकार्पण किया गया।

स्वच्छता पखवाड़ा–2026 ने डीसीएसईएम परिवार एवं अणुशक्तिनगर समुदाय में स्वच्छता के प्रति जागरूकता, उत्तरदायित्व एवं सहभागिता की भावना को और सुदृढ़ किया। यह अभियान ''स्वच्छता ही सेवा'' के संकल्प को व्यवहारिक रूप देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ।











स्वच्छता पखवाड़ा - 2026





















अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, मुंबई में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दिनांक 20.06.2025 (शुक्रवार) को द्वितीय तल बहुउद्देशीय हॉल में 16:30 बजे डीसीएसईएम स्टाफ क्लब के सहयोग से मनाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय के निदेशक श्री के. महापात्रा ने की। योग एवं ध्यान सत्र का संचालन योगाचार्य श्रीमती चिंतल बिलोरिया ने किया। निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारियों सहित लगभग 150 स्टाफ सदस्यों ने आधे घंटे के योग सत्र में भाग लिया।

कार्यक्रम का समापन ॐ के उच्चारण के साथ हुआ, जिसके बाद सभी प्रतिभागियों ने सर्व कल्याणकारी प्रार्थना की।









मराठी भाषा गौरव दिन समारोह

दिनांक 25 मार्च, 2026 (बुधवार) को परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड भवन के सी-ऑडिटोरियम में निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, मुंबई द्वारा ''मराठी भाषा गौरव दिन'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुंबई विश्वविद्यालय के लोक कला अकादमी के प्रमुख डॉ. गणेश चंदनशिवे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय के निदेशक श्री के. महापात्रा ने की। इस अवसर पर निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) श्री एस. एस. गोंडाणे विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ श्री समीर जाधव, परियोजना निदेशक (लाइगो-इंडिया परियोजना) द्वारा परिचयात्मक वक्तव्य से हुआ। तत्पश्चात् श्रीमती राखी वेदपाठक ने मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। विशेष अतिथि श्री एस. एस. गोंडाणे ने अपने विचार व्यक्त किए। बंगाली भाषी होने के बावजूद निदेशक श्री के. महापात्रा ने अपना संबोधन मराठी भाषा में देकर उपस्थित जनसमूह का विशेष उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के दौरान महाराष्ट्र के इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य तथा राज्य के प्रमुख व्यक्तित्वों - जिनमें सिनेमा एवं रंगमंच कलाकार, साहित्यकार, कवि, स्वतंत्रता सेनानी तथा सामाजिक एवं आर्थिक सुधारक शामिल थे - पर आधारित एक विशेष वीडियो प्रस्तुति प्रदर्शित की गई।

श्री राकेश दलवी ने मुख्य अतिथि डॉ. गणेश चंदनशिवे का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। साथ ही डॉ. चंदनशिवे की उपलब्धियों पर आधारित एक सचित्र लघु फिल्म भी प्रदर्शित की गई, जिसे श्री योगेश पाटिल एवं श्री केदार बयांगोलकर ने अत्यंत सुंदर ढंग से तैयार किया था।

मुख्य आकर्षण के रूप में डॉ. गणेश चंदनशिवे ने अपनी सात सदस्यीय लोक कलाकारों की टीम के साथ पवाड़ा, अभंग, गोंधल, भावगीत, ओवी तथा लावणी जैसी विभिन्न मराठी लोक एवं सांस्कृतिक शैलियों की प्रस्तुति दी। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से महाराष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं एवं लोककला का सुंदर चित्रण किया गया।

संगीतमय प्रस्तुति में सावित्रीबाई फुले के नेतृत्व में महिलाओं की शिक्षा, छत्रपति शिवाजी महाराज एवं अन्य स्वतंत्रता सेनानियों की देशभक्ति तथा डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर द्वारा निर्मित संवैधानिक प्रावधानों जैसे विषयों पर आधारित प्रभावशाली सामाजिक संदेश भी सम्मिलित थे।

कार्यक्रम में निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंधन निदेशालय के बड़ी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा कार्यक्रम का आनंद लिया।

कार्यक्रम का समापन श्रीमती नम्रता कदम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।



भारत के संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन

भारत सरकार, नई दिल्ली के कैबिनेट सचिव से प्राप्त निदेशों तथा परमाणु ऊर्जा विभाग, मुंबई द्वारा उसके विधिवत पृष्ठांकन के आधार पर विक्रम साराभाई भवन में स्थित पांच इकाइयों (1) क्रय एवं भंडार निदेशालय (2) निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंधन निदेशालय (3) भारी पानी बोर्ड (4) नाभिकीय पुनर्चक्रण बोर्ड - भा.प.अ.के. एवं (5) न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड द्वारा पहली बार संयुक्त रूप से भारत के संविधान की प्रस्तावना के सामूहिक वाचन का कार्यक्रम बुधवार दिनांक 26 नवंबर, 2025 को विक्रम साराभाई भवन के ओपन एयर एम्फी थिएटर में सुबह 11:00 बजे आयोजित किया गया।

परमाणु ऊर्जा विभाग की इकाइयों के निम्नलिखित इकाई प्रमुख और प्रशासनिक प्रमुख इस समारोह में उपस्थित थे :

क्रय एवं भंडार निदेशालय :

श्री वेद सिंह, निदेशक, श्री एस.वाई. कांबले, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय :

श्री के. महापात्रा, निदेशक, श्री एस.एस. गोंडाणे, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

भारी पानी बोर्ड : श्री वी.वी.एस.ए. प्रसाद, निदेशक (प्रचालन/तकनीकी), श्रीमती अजिथा थरियन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

नाभिकीय पुनर्चक्रण बोर्ड - भा.प.अ.के. :

श्री के. जयनारायणन, कार्यपालक निदेशक (अभिकल्पन), श्री जे.एन. मकवाना, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड :

श्री सुधीर बी. शेल्के, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन), श्री पी. मोहंती, महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

श्री सुधीर बी. शेल्के, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन), न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने शुरुआती भाषण दिया। श्री वेद सिंह, निदेशक, क्रय एवं भंडार निदेशालय ने संविधान की प्रस्तावना हिंदी में पढ़ी एवं श्री के. महापात्रा, निदेशक, निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय ने संविधान की प्रस्तावना का अंग्रेजी संस्करण पढ़ा। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रिंस ग्रोवर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने किया।

परमाणु ऊर्जा विभाग की पांचों इकाइयों के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, सुरक्षा एवं संविदा कर्मचारियों ने भारत के संविधान की प्रस्तावना को सामूहिक रूप से पढ़ने में उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम राष्ट्रगान के साथ समाप्त हुआ।





पब्लिक आउटरीच के तहत महाराष्ट्र के अंबरनाथ स्थित आदिवासी आश्रमशाला में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम



जनजातीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली के निर्देशों के अंतर्गत भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग के निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, मुंबई द्वारा दिनांक 13 नवंबर, 2025 (गुरुवार) को एडवोकेट नकुल पाटिल आदिवासी आश्रमशाला, मुकाम : करव, पोस्ट : वांगनी, तालुका : अंबरनाथ, जिला : ठाणे, महाराष्ट्र में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई।

इस स्मारक समारोह का उद्देश्य राष्ट्रीय इतिहास एवं संस्कृति में जनजातीय समुदायों के योगदान का स्मरण करना तथा नई पीढ़ी को सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय गौरव एवं जनजातीय परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रेरित करना था।

कार्यक्रम के आयोजन हेतु मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. एस. गोंडाणे के नेतृत्व में निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय की एक टीम ने आदिवासी आश्रमशाला, अंबरनाथ का दौरा किया। टीम में श्री पी. एस. सालुंखे, प्रमुख - बागवानी एवं कॉस्मेटिक अनुरक्षण अनुभाग (पूर्वी क्षेत्र) एवं अधीक्षक (विशेष मरम्मत - पूर्वी क्षेत्र), श्री अभिजीत मोहिते, प्रभारी - जेम सेल तथा श्री अतुल ठौरा, प्रशासनिक अधिकारी सहित पाँच सहायक कर्मचारी सम्मिलित थे। कार्यक्रमों का आयोजन विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों के सहयोग से किया गया।

स्मारक समारोह के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया :

1. शैक्षणिक वर्ष 2024-2025 में कक्षा 8वीं, 9वीं एवं 10वीं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली मेधावी छात्राओं का सम्मान।
2. माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के लिए निबंध प्रतियोगिता।
3. माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता।
4. माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के लिए चित्रकला एवं पेंटिंग प्रतियोगिता।
5. छात्र एवं छात्रा टीमों के लिए कबड्डी प्रतियोगिता।
6. मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. एस. गोंडाणे द्वारा ''बिरसा मुंडा का जीवन एवं संघर्ष : एक प्रेरणादायक कहानी'' विषय पर व्याख्यान।
7. श्री प्रदीप एस. सालुंखे द्वारा ''बिरसा मुंडा जयंती : जनजातीय गौरव दिवस का महत्व'' विषय पर व्याख्यान।
8. पुरस्कार वितरण समारोह।
9. राष्ट्रीय गीत ''वंदे मातरम्'' का सामूहिक गायन।

कार्यक्रमों में लगभग 400 छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षण स्टाफ का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

पूरे आयोजन के दौरान विद्यार्थियों में विशेष उत्साह एवं देशभक्ति की भावना देखने को मिली। कार्यक्रम ने जनजातीय समाज के महान स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष, विचारों एवं योगदान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पब्लिक आउटरीच के तहत महाराष्ट्र के अंबरनाथ स्थित आदिवासी आश्रमशाला में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम









अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

महिला प्रकोष्ठ

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय के महिला प्रकोष्ठ द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 13 मार्च 2026 को प्रातः 9.30 बजे, विक्रम साराभाई भवन के बहुउद्देश्यीय सभागार, द्वितीय तल में बड़े उत्साह एवं सहभागिता के साथ किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कार्यस्थल एवं समाज में महिलाओं की उपलब्धियों, योगदान तथा सशक्तिकरण को सम्मानित करना था। समारोह का शुभारंभ श्रीमती जे. रम्या, सदस्य सचिव, डीसीएसईएम महिला प्रकोष्ठ के स्वागत भाषण से हुआ। तत्पश्चात श्रीमती अंजली कारडा, अध्यक्ष, डीसीएसईएम महिला प्रकोष्ठ द्वारा मुख्य अतिथि डॉ. निगमानंद मिश्रा का परिचय कराया गया एवं अध्यक्ष महोदया ने महिलाओं की भूमिका पर प्रेरणादायक विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि डॉ. निगमानंद मिश्रा, विभागाध्यक्ष प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग, बीएआरसी अस्पताल, ने महिला सशक्तिकरण एवं स्वास्थ्य पर प्रेरक उद्बोधन दिया। श्री के. महापात्रा, निदेशक, डीसीएसईएम ने महिला कर्मचारियों के योगदान की सराहना करते हुए निरंतर प्रगति हेतु प्रोत्साहित किया। श्रीमती एस. प्रेमलता, उप लेखा नियंत्रक, ने ''गिव टू गेन'' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मीनाक्षी सिंह एवं श्री ताजिंदर सिंह लांबा द्वारा किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने विविध प्रस्तुतियां दीं। स्पॉट क्विज़ प्रतियोगिता ने कार्यक्रम में विशेष उत्साह का संचार किया।

कार्यक्रम का समापन श्रीमती शिखा मेश्राम के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस समारोह से संविदा कर्मियों सहित लगभग 150 महिला कर्मचारियों को लाभान्वित किया गया। प्रबंधन, गणमान्य व्यक्तियों, आयोजकों एवं प्रतिभागियों के सहयोग से यह आयोजन अत्यंत स्मरणीय एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।









अप्रैल 2025 से मार्च 2026 के दौरान सेवानिवृत्त कार्मिक

क्रम सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की दिनांक
01.	श्रीमती एलीमा परेरा	वरिष्ठ निजी सचिव	30.04.2025
02.	श्री बी.एन. प्रसाद	वैज्ञानिक अधिकारी/ई	30.04.2025
03.	श्री एम. थानिकासलम	तकनीशियन/एफ	30.04.2025
04.	श्री आर.जी.तेम्बे	सहायक हलवाई सह कुक	31.05.2025
05.	श्री ई. धर्मलिंगम	वरिष्ठ तकनीशियन/जे	31.05.2025
06.	श्री ई.वी.लिमन	वरिष्ठ तकनीशियन/जे	31.05.2025
07.	श्री के.जी. जाधव	तकनीशियन/एफ	31.05.2025
08.	श्री ए.एस. यादव	वैज्ञानिक अधिकारी/एच	31.05.2025
09.	श्री आर.टी. राजपूत	वैज्ञानिक अधिकारी/एफ	31.05.2025
10.	श्री मारुति जी. पाटिल	ड्राइवर ग्रेड II	31.05.2025
11.	श्री एम. शिवंथाराज	वरिष्ठ तकनीशियन/एच	30.06.2025
12.	श्रीमती सांथी एम.	वरिष्ठ तकनीशियन/एच	30.06.2025
13.	श्री लक्ष्मण आर गजंकुश	वैज्ञानिक सहायक/जी	30.09.2025
14.	श्री बी अरुल	वरिष्ठ कार्य सहायक/ए	30.11.2025
15.	श्रीमती पी.एस. सावंत	वरिष्ठ तकनीशियन/एच	30.11.2025
16.	श्रीमती एम आर परांजपे	वरिष्ठ लिपिक	30.11.2025
17.	श्री ए.वी. गवली	वैज्ञानिक अधिकारी/जी	30.11.2025
18.	श्रीमती दिविशा दिनेश शिवतारकर	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2025
19.	श्री एस. रायप्पन	वरिष्ठ तकनीशियन/एच	31.01.2026
20.	कु. माधुरी बी नागांवकर	वरिष्ठ लिपिक	31.01.2026
21.	श्री बी. सी. थोरात	तकनीशियन/एफ	31.01.2026
22.	श्री पी. आर. मोरे	वैज्ञानिक सहायक/एफ	28.02.2026
23.	श्रीमती वी. पी. बेंद्रे	वरिष्ठ लिपिक	28.02.2026
24.	श्री ए. के. जाना	वैज्ञानिक अधिकारी/एच	31.03.2026

अणुशक्तिनगर में प्रमुख मार्गों के नाम

क्र.सं.	नाम	स्थान
1.	डॉ. होमी जे. भाभा मार्ग	अणुशक्तिनगर मुख्य द्वार से बीएआरसी उत्तरी द्वार
2.	डॉ. विक्रम साराभाई मार्ग	मंडाला गेट से बीएआरसी उत्तरी द्वार
3.	डॉ. पी. के. आयंगर मार्ग	हस्तिनापुर से एलोरा से कामेट मार्केट
4.	डॉ. एच. एन. सेठना मार्ग	पीजीएच से एवरेस्ट से उदयगिरि
5.	डॉ. श्रीकुमार बनर्जी मार्ग	नीलगिरि अंडरपास से आकाशगंगा
6.	डॉ. राजा रामन्ना मार्ग	पीजीएच से मलयगिरि से सेक्टर मार्केट
7.	सर सी. वी. रमन मार्ग	अणुशक्तिनगर मुख्य द्वार से हॉस्पिटल गेट से तुलसीदास चौक
8.	डॉ. ए. पी. जे. कलाम मार्ग	एनयूबी जंक्शन से एईजेसी से तुलसीदास चौक
9.	डॉ. शेखर बसु मार्ग	वेस्टर्न सेक्टर तुलसीदास चौक से सीआइएसएफ क्वार्टरों तक
10.	विद्यार्थी मार्ग	एईआरबी से एईजेसी
11.	वैज्ञानिक मार्ग	एनयूबी जंक्शन से एचबीएनआई से रागमाला
12.	डॉ. आर. चिदंबरम मार्ग	वी एन पुरव मार्ग से अप्सरा-साइरस बिल्डिंग

परमाणु ऊर्जा विभाग - दृष्टि और लक्ष्य

दृष्टि

परमाणु ऊर्जा विभाग का दृष्टिकोण प्रौद्योगिकी के माध्यम से भारत को सशक्त बनाना, अधिक धन का सृजन करना और अपने नागरिकों को जीवन की बेहतर गुणवत्ता प्रदान करना है। इसे परमाणु और विकिरण प्रौद्योगिकियों के विकास और परिनियोजन और उनके अनुप्रयोगों के माध्यम से भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाकर, पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन और हमारे लोगों के लिए बेहतर स्वास्थ्य देखभाल के प्रावधान में योगदान करके प्राप्त किया जाना है।

लक्ष्य

- फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों और संबंधित ईंधन चक्र सुविधाओं के साथ थोरियम रिएक्टरों के विकास के साथ-साथ स्वदेशी और अन्य सिद्ध प्रौद्योगिकियों की तैनाती के माध्यम से परमाणु ऊर्जा की बढ़ती हिस्सेदारी।
- रेडियोआइसोटोप के उत्पादन के लिए अनुसंधान रिएक्टरों का निर्माण और संचालन और चिकित्सा, कृषि और उद्योग, कैंसर देखभाल, जल संबंधी प्रौद्योगिकियों, अपशिष्ट प्रबंधन आदि के क्षेत्र में विकिरण प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों को पूरा करना ।
- त्वरक, लेजर, सुपरकंप्यूटर, उन्नत सामग्री और इंस्ट्रूमेंटेशन जैसी उन्नत तकनीकों का विकास करना और उद्योग को प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को प्रोत्साहित करना।
- परमाणु ऊर्जा और विज्ञान के संबंधित सीमांत क्षेत्रों में बुनियादी अनुसंधान के लिए समर्थन, विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ बातचीत; डीएई के कार्यक्रमों से संबंधित अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को समर्थन, और अनुसंधान के संबंधित उन्नत क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, और
- राष्ट्रीय सुरक्षा में योगदान।

परमाणु ऊर्जा विभाग की संरचना



विक्रम साराभाई भवन



हिंदी अनुभाग, द्वितीय तल, उत्तरी स्कंध, विक्रम साराभाई भवन, अणुशक्तिनगर, मुंबई - 400094.
HINDI SECTION, 2ND FLOOR, NORTH WING, VIKRAM SARABHAI BHAVAN, ANUSHAKTINAGAR, MUMBAI - 400 094.
ई-मेल : ddol@dcsem.gov.in hindi@dcsem.gov.in